मसीहा वतन का

डॉ० हरीश



देवाशीष प्रकाशन
अजमेर : इलाहाबाद

☐ प्रकाशक :
देवाशीष प्रकाशन
अजमेर : इलाहाबाद

☐ प्रथम संस्करण : अक्टूबर 1984

☐ मूल्य : डीलक्स संस्करण : 100.00

☐ मुद्रक : वैदिक यन्त्रालय, अजमेर

☐ आवरण शिल्प : श्री प्रकाश पाटनी
सज्जा : प्रो० राम जैसवाल
प्रवीण शर्मा

☐ प्राप्ति स्थान : 1. ई-12, मीरशाह अली कॉलोनी, अजमेर [राज०]
2. 23, अशोकनगर, इलाहाबाद [उ० प्र०]

MASIHA VATAN KA ☐ Poems By—Dr. Harish ☐ Price : Rs.100

मसीहा वतन का और मैं

प्रस्तुत काव्य संग्रह "मसीहा वतन का" हमारे प्यारे प्रधान मंत्री श्रद्धेय प० जवाहरलाल नेहरू की प्रथम पुण्य-तिथि पर ही तैयार हो गया था। पिछले 18 वर्षों तक इसके प्रकाशित न होने की कहानी निश्चय ही दुखान्त है, जिसने मुझे इस स्वार्थी और क्रूर दुनियाँ के स्वभाव की अनेक विकृतियों से परिचित कराया है। इसे उत्तरप्रदेश सरकार के सूचना-विभाग से प्रकाशित करने के लिये तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती सुचेता कृपलानी ने स्वीकृत कर लिया था। यह काव्य तब, सूचना-विभाग में प्रकाशनार्थ स्वीकृत पड़ी, अनेक कृतियों की पंक्ति में स्थापित कर दिया गया और अनेक वर्षों तक इसका क्रम न आ सका। तब लाचार होकर, श्री ठाकुर प्रसाद सिंह से, मैं इसे वापस ले आया। रॉयल्टी का सिलसिला तय नहीं हो पाने से, ३ वर्ष तक यह प्रकाशकों के चक्कर में पड़ा रहा, फिर मैंने इसे राजस्थान साहित्य अकादमी में प्रकाशनार्थ भेज दिया, पर वहाँ भी पूरे ९ वर्ष इस पर कोई निर्णय नहीं हो सका और मैं संग्रह वापस ले आया। इसके बाद भी अकादमी इस पर प्रकाशन-सहायता देने तक से मुकर गई। इस तरह मनुष्य स्वभाव की पारस्परिक ईर्ष्या और विकृतियों की कृपा से मैं आज तक इसे कलेजे से लगाकर बैठा रहा हूँ। इसमें स्नेह से सम्मतियाँ भेजने वाले अनेक महापुरुष—श्रद्धेय श्री जाकिर हुसैन साहब, डॉ० सम्पूर्णानन्द जी, श्रद्धेय कविवर श्री सुमित्रानन्दन पंत, माननीय श्री मोहन लाल सुखाड़िया, श्री हरिभाऊ उपाध्याय, श्री निरंजन नाथ आचार्य आदि तो दिवंगत ही हो गए, पर मेरी, उस पुण्यश्लोक-व्यक्तित्व, श्री जवाहरलाल जी के प्रति जन्मे, इन श्रद्धा और भाव-गीतों के प्रकाशन की, प्यास दिन प्रतिदिन बढ़ती हीं गई। मैं उन्हें असाधारण रूप से प्यार करता था। इलाहाबाद और राजस्थान में एक कवि के रूप में जीवन में तीन बार उनसे व्यक्तिगत रूप में मिलने और अपनी बातें कहने का मुझे अवसर मिला और मैंने उस व्यक्ति में आकाश-धर्मा महाप्राण पुरुष के ही दर्शन किए। कवियों के लिये उनके मन में एक अजीबो-गरीब ममता देखी थी मैंने और इसी का परिणाम है, इसके प्रकाशन का मेरा व्यामोह। पुराना होते हुए भी, मुझे यह आज भी वैसा ही नया और सहज ममता का सृजन लगता है और इसीलिये इसे अविकल प्रकाशित कर रहा हूँ।

मुझे श्रद्धेया श्रीमती इन्दिरा जी, के पास पहुँचने का अवसर दिया। इसके पूर्व मैं उनसे पत्र व्यवहार कर चुका था।

श्रद्धेया इन्दिरा जी, जो उस समय देश की सूचना-प्रसार मत्री थी, ने मेरे दिल्ली आवास पर पहुँचते ही आदरणीया विजयलक्ष्मी पडित से कहा—'आइये बुआजी ! पापा पर एक श्रद्धाजलि आई है, उसे सुनिए।' श्रीमती पडित बोली—'मेरे भाई पर मुझसे अच्छा कौन लिख सकता है ?' मैंने उत्तर दिया—यह सृजन कोई मेरा दंभ नही, यह तो श्रद्धेय स्व० पंडित जी के प्रति मेरे मन का भाव-भीना श्रद्धा-अर्घ्य है। आदरणीया दीदी श्रीमती इन्दिरा जी ने इसके कुछ गीत सुनाने का मुझे अवसर दिया, इसीलिये इलाहाबाद से आया हूँ। सौभाग्य से श्रीमती कृष्णा हठीसिह भी वही थी। तीनो ने बैठकर ेगीत सुने। श्रद्धेया दीदी इन्दिरा जी ने अत्यन्त व्यस्त होते हुए बडे म ाव विह्वल होकर इसके तीन गीत—'वह कश्मीरी घाटी का सुर्खीला गु म खाली हाथ लिए पतवार सभी लौटे' और मृत्युगीत—'गुलाबों मे जै नही है'—आदि सुने। इसके बाद मुझे कहा—"हरीश ! यह कृति पास छोड़ दो, मैं इस पर कुछ लिखना चाहती हूँ।" उन्होने व्यस्त क्षणो मे भी मेरी कृति पर जो शब्द लिखकर इसकी प्राण-प्रतिष्ठा की है, उसके लिये मैं महिमामयी इन्दिरा जी को सादर प्रणति-निवेदन ही कर सकता हूँ।

आज हमारे देश की बागडोर, हमारे पूज्य राष्ट्रपिता बापूजी के आदर्शों पर चलने वाली स्व० नेहरू की उन्ही महिमामयी पुत्री श्रद्धेया इन्दिरा जी के हाथों मे है। वे तन मन धन से भारत के विराट निर्माण मे लगी हैं। अनेक बार उन्होने विनाश के कगार पर पहुँचे इस देश की अखण्डता की रक्षा की है। उनकी गणना विश्व की महान शक्तिशाली नारियों में की गई है। हमारा गौरव है कि वे हमारी प्रधानमत्री हैं, और वे हमारे जन-नायक के आदर्शों और अधूरे सपनों को साकार करने मे अहरह सन्नद्ध है। हम उनके प्रति हृदय की अगाध गहराइयो से अपनी मंगलकामनाएँ समर्पित करते हैं। प्रभु उन्हें राष्ट्र की सेवा करने के लिये दीर्घायु और अपराजेय शक्तियाँ प्रदान करे, तभी हमारे 'मसीहा वतन का' के सपने साकार हो सकेंगे।

हमारे प्यारे प्रधान मंत्री स्व० लालबहादुर शास्त्री की भाँति इस बीच एक कहर हम पर प्रिय भाई संजय के अकाल निधन का गिरा। एक नृशंस वज्रपात। सजय, जो राष्ट्र नायक नेहरू के आदर्शों को थाती मानकर देश के निर्माण-पथ पर अग्रसरित थे, पर निर्मम काल ने उस उगते सूर्य की भाँति उठते कमल को निर्ममता से नोच डाला और अब हम उन्हें पूरे भारत का बेटा मानकर अपनी ममता का अर्घ्य देते हैं।

ग्रौर ग्राज संजय के बाद हमारे प्यारे भाई श्री राजीव गाँधी का संकल्प हमारे देश के नव-निर्माण ग्रौर भावनात्मक एकता को ग्रोर ग्राकर्षित हुआ है। उन्होंने चुनौतियों को स्वीकारना प्रारम्भ किया है। हम उनके लिये कामना करते हैं कि वे इस समग्र आकाश पर मध्याह्न के प्रखर सूर्य की भाँति छा जायें। तपें ग्रौर कर्मठता एवं निर्माण की ग्राग मे सबको तपाकर कुन्दन कर डालें, तभी "उनकी चुनौती : उनके सपने" साकार हो सकेंगे। ग्राज नये भारत के निर्माण को सुदृढ़ करने मे भाई राजीव ही हमारी आशा के ध्रुव है ग्रौर हम अपने ग्रन्तस् से प्रभु से मानते है कि वे निरन्तर ग्रागे बढ़ें, विजय-श्री से विभूषित हों ग्रौर हमारे जन नायक जवाहरलाल जी के ग्रादर्शों का ग्रभियान उठायें, ताकि हमारा पूरा देश उनकी कर्मठता का पूरा पूरा साथ दे ग्रौर ग्रपना हार्दिक विश्वास उनमें व्यक्त कर सके ग्रौर वे पंडित जी की तरह चक्रवर्ती होकर विभूषित हों।

"मसीहा वतन का" ग्राज छपकर ग्रापके सामने ग्रा रही है। ग्राशा की निष्कप "जवाहर-ज्योति" इसमें ग्राज तक जलती रही है। कृति कैसी है, इसका निर्णय जनता ही करेगी। ग्राप सब करेंगे, क्योंकि इसमें मेरा व्यक्तिगत कुछ भी नही, सब ग्रापका है, इस प्यारे भारत का है, जिसने ऐसी ग्रादर्श विभूति को जन्म दिया ग्रौर बापू के प्यारे जवाहर को जन जन के प्यार के समुद्र में ग्रवगाहन करा ग्रमर कर दिया।

"मसीहा वतन का" उन सबको ग्रर्पित है, जो ग्राजादी की नींव के पत्थर बन गए। जो स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर मुस्कराते हुए भारत माँ की भेंट चढ़ गये। जन नायक नेहरू के बाद हमारे प्यारे प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री का बलिदान ग्रविस्मृतव्य है। यह कृतित्व चीन ग्रौर पाकिस्तान के साथ हुए पिछले युद्धों में देश की सुरक्षा के लिये मिटने वाले उन सभी शहीद सैनिकों को समर्पित है। भाव ग्रौर श्रद्धा-भीनी यह काव्य-कृति देश के उन सभी हुतात्माग्रों को ग्रर्पित है, जिनके नाम ग्राजादी के दीवानों मे प्रथम पाँक्तेय रहे हैं।

श्रद्धेया महादेवी जी, श्रद्धेय सुमित्रानन्दन पंत, डॉ० सम्पूर्णानन्द जी, पं० कमलापति त्रिपाठी, माननीय सुखाड़िया जी, हरिभाऊ जी उपाध्याय एवं ग्राचार्य श्री निरंजननाथ, श्री शिवचरण माथुर ग्रादि सभी ने इसके कई गीतों को सुनकर मेरा उत्साह बढ़ाया है। इनके ग्रनुग्रह का सदैव ग्रधिकारी रहा हूँ।

'मसीहा वतन का' काव्य को ग्रापके हाथों में पहुँचाने में मेरे कृपालु मित्रों ग्रग्रजों ग्रौर स्वजनों ने, जो ग्रात्मिक सहयोग प्रदान किया, उनमें श्री राव साहब नारायणसिंह मसूदा, भू० पू० शिक्षामंत्री, राजस्थान, श्री रामपाल उपाध्याय भू० पू० सहकारिता मंत्री, राजस्थान, श्री मानकचन्द मोगानी, जिला कॉंग्रेस ग्रध्यक्ष,

अजमेर, प्रसिद्ध समाज सेवी श्री चम्पालाल जैन ब्यावर, श्री हनुमन्तसिंह रावत अध्यक्ष, जिला परिषद् अजमेर, श्री टी० आर० वर्मा जिलाधीश, अजमेर, श्री नरहरि शर्मा, प्रशासक, नगर पालिका, अजमेर, श्री सत्यदेव शर्मा, सचिव, जिला परिषद्, श्री सुमेरसिंह भंडारी, सचिव, नगर विकास न्यास, अजमेर तथा श्री के० रामचन्द्रराव, अधि० अभियन्ता एवं श्री जगतसिंहजी, ए० डी० जे०, अजमेर के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

स्नेहमयी श्रद्धेया अम्मा श्रीमती चन्द्रकला वर्मा एवं हमारे मामा वरिष्ठ-साहित्यकार, स्व० श्रीकृष्णदास (इलाहाबाद) के असीम दुलार की छाया में इस पूरे काव्य का सृजन हुआ है। उनकी आशीषें इस पूरे काव्य के मूल मे रही हैं। इनकी कृपा मेरे लिए अविस्मृतव्य है।

इस कृति के मुखपृष्ठ और साज-सज्जा में मेरे परम स्नेही मित्र प्रकाश पाटनी ने अथक श्रम किया है। अपने अभिन्न मित्र प्रो० राम जैसवाल का भी आभारी हूँ, जिनका पूरा सहयोग आद्यन्त कृति के साथ रहा।

प्रियवर बंधु श्री सतीश शुक्ल, व्यवस्थापक, वैदिक यंत्रालय ने कृति को छापकर मेरी कामना को मनोरथ में परिणत किया और श्री देवाशीष प्रकाशन ने कृति को प्रकाशित कर आप तक पहुँचाया, इसके लिये मैं दोनों का हृदय से आभार प्रदर्शित करता हूँ।

"मसीहा वतन का" आपके हाथों में है। इसे आपका और शिक्षा-जगत का प्यार मिला, तो सृजन को सार्थक समझूँगा।

२५ अक्टूबर, १९८४
ई-12, मीरशाह अली कॉलोनी
अजमेर

[डॉ० हरीश]
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

एक प्रणति : एक नमन

तुम जवाहरलाल !

सन् 1964 की 27 मई का वह दिन। कहर गिर पड़ा। लाख-लाख दिल रोये। करोड़ों कलेजे जैसे फुँके जा रहे हों। हमारे प्यारे जवाहरलाल नहीं रहे। कैसे लिखूँ ? विश्वास नहीं हो रहा है।



जिन्दगी ने जैसे साँस तोड़ दी। बीसवीं सदी का सबसे गया-बीता दिन। मरण ने अपने इतिहास में एक पन्ना और जोड़ दिया। एक ऐसा पन्ना, जिसकी हर तस्वीर खुली। मेरे देश की, मेरे देश के जन-जन की। एक ऐसी तस्वीर, जिसमें एक युग का, एक नये भविष्य का, एक नयी जिन्दगी का अथ और इति दोनों एक साथ। एक पटाक्षेप।



धरती का बेटा उठ गया। उठ क्या गया, क्रूर काल के द्वारा हमसे छीन लिया गया। वह बेटा, जो हर खेत, हर मेड़, हर आँगन और हर चौराहे पर दिखता, हर घर में जन्मा, पला और हर एक का था। उस पर किसी सीमा-विशेष का क्या हक ? वह तो लाखों का बेटा, करोड़ों का भाई। कुटिया, गलियों, कूचों चौराहों, महलों और मोड़ों का। सभी का एक। न भूतो, न भविष्यति।



एक बूँद, समुद्र बन गई। सीमा असीम। रूप अरूप हो गए। वह हमारा होकर भी इतना फैला, जैसे आसमान। सबका आसमान। इससे किसी को इन्कार नहीं। उसकी आवाज से जी नहीं भरा। वह ख्वाब हमारा। वह प्यार हमारा। उसको देखने को तरसे। उसके स्पर्श भर को तरसे। हम तो तुमको जी भर के भी देख न पाये……।"

वतन का रहनुमा ! शांति का प्रतीक। वह जवाहर ! भारत का ही नहीं, सारी दुनियाँ का। शांति-अहिंसा का रहबर। सबका महबूब। मेरे वतन का सिपाही, चांद-सूरज के वीरन की तरह प्यारा। कौन उसका हमसर हो सकता है ? और आज वही हमारा इतिहास बन गया है, केवल एक ख्वाब बन गया, जो हाँ, केवल एक ख्वाब।



बच्चों का गुलिस्ताँ, मुस्कुराता सुर्ख गुलाब, घाटी के मेघ जैसा। शिशुओं में शिशु। चाचा नेहरू ! बच्चों को इस कदर प्यारा, जैसे प्यासे को पानी। हँसते-खिलते नौनिहालों का जिन्दादिल एक गुलाब, महमह करता, सुर्ख, जिसका हर पाटल आज पूजा का आधान बन गया है।



धरती का ध्रुवतारा टूट गया। मेरा हिमालय गल गया। एक पासवाँ, काफिले का अकेला माही। माँ का बेटा। आजादी का सूरज। भारत माँ का एक अकेला लाल। पचास वर्षों तक, जिसने तन-मन-धन सबको माँ के चरणों में अर्पित कर दिया। प्रहरी बनकर लक्ष्मण की तरह, राम बनकर मर्यादाओं की रक्षा में। करुणा, ममता, दया और स्नेह का सिद्धार्थ बनकर। सियासत की दौलत से मालामाल। सारी दुनियाँ के झगड़े शांति से निबटाने वाला।



वह इतिहास-पुरुष ! वह मरण-पर्व ! वह नूर का जल्वा ! निहायत हसीन। जिन्दगी को बड़ी खूबसूरती से जीने वाला। सुख-दु.ख में समान, धैर्य की गाँठ बाँधकर चलने वाला। वह जवाहर। हमारा नेता। नर-नाहर। मरण ने जिसके चरण छू लिये और मुझे विश्वास है, जिसके महानिर्वाण पर मरण भी रोया होगा, जरूर रोया होगा और वह भी ग्लानि की आग में जल जलकार, फूट-फूट कर। इतिहास-पुरुष का वह शरीर; वज्रादपि कठोर, कुसुमादपि कोमल। पर अब यश की काया। शेष केवल स्मृतियों के साये। भारत माँ के उस विश्व-बंधु बेटे की यादें मात्र।



और आज हमारे सामने ये दर्दों के अट्टहास ! गम हमी ने तो पिए हैं। जिन्दा बच्चे दीवारों में हमी ने तो चुनवाए हैं। वतन के स्वाभिमान के लिये घास की रोटियाँ हमी ने तो खाई हैं। हमी तो कूदे हैं धधकते जौहर-कुंडों में। हमारी गौरव-गाथाओं का इतिहास सामान्य नहीं। उस पर तो पूरा एक पाँचवा वेद लिखा जा सकता है। पर ये अट्टहास, जो मेरे देश के हर घर, हर आँगन और देहरी-देहरी पर खड़े हैं, इनका क्या करूँ ? इन सबको क्या कहूँ ? तुम्हीं बताओ, तुमने तो अँधियारे रास्ते देखे थे न ? क्या तुम्हारे छिनने से ही हम शाप-ग्रस्त हो गए ?

तुम से आशीष माँग रहा हूँ। अपने देश के करोड़ों बच्चों के लिये। हमने तुम्हें बोया था खेत-खेत में। देश के सुदूर आँचलों में। धरती माता हमें अवश्य देगी, तुम सा एक फौलादी कर्मवीर ! जाने इनमें कितने नेहरू है। कौन जाने ?""कौन जाने ?



तुम देख रहे हो न ? हम किस कदर तुम्हें याद कर रहे है। सारे पन्ने अधूरे खुले रह गए और तुम मुस्कराते कमल की तरह साँझ होते ही अपने पाटल बद कर, सिमिट गए, क्षितिज बनकर, मुस्कान बनकर, रोशनी बन कर।



आठ जून और प्रयाग मे तुम्हारा अस्थि-विसर्जन। तुम्हारी अस्थियाँ ! मेरा मौन तो आँसुओ मे भी न बह सका। वह आज भी तुम्हारा वही दर्द लिए जिंदा है। शायद रहेगा भी। आमरण। वह सगम की हृदय हिला देने वाली तस्वीर। वह विदाई वेला। श्री कामराज चार वाक्य बोल पाए। श्री लाल बहादुर शास्त्री का दो वाक्य कहकर गला रुध गया और फफक कर रो पडे। पं० कमलापति त्रिपाठी जैसे भव्य-वक्ता भी कुछ अधिक कह न पाये। बहिन इन्दिराजी चि० संजय और राजीव का मन भी पीड़ा मे डूब गया। अनेक गणमान्य नेताओं की आँखें डबडबा आई। पीड़ा का आरा मेरे मन पर भी चलता रहा और मैं पूरे एक माह मौन हो गया। उस असह्य पीड़ा में डूबा मन। दर्द आँसू और आघात का सगम !



और तुम्हारे महानिर्वाण के बाद सहसा गला रुँध गया मेरा। एक महीने तक मैं इस भयंकर आघात को बोले-अनबोले सहता रहा हूँ। दोस्तो ने तुम पर लिखने को प्रेरित किया। उनको क्या कहता, कैसे कहता कि "मैं तुम्हे प्यार करता था।" जिसमे श्रद्धा करे, उस पर तो हम पुराण लिख डालें, पर जिसको हम प्यार करें और वह भी तहे दिल से; जिसके लिये चीख-चीख कर कहे, लाख-लाख कोटि कोटि स्वरों मे कि—"हम तुम्हे प्यार करते है,"—उसके लिये क्या लिख डालें ? वाणी ने कहा, मौन रहो। आँसू और बलिदान दो ही इसके मूल्य है। बताओ तुम्हे क्या स्वीकार है ?



सूरज से हमको प्यार तो है, पर उसकी ओर झाँके कैसे ? ताकें कैसे ? और तुम हमारी शमा थे, ऐसी शमा, जिसमें हजार-हजार सूरज जले, लाख-लाख परवाने जिस पर मरें, बताओ क्या लिखता तुम्हारे लिये ? डॉ० सुधीन्द्र की आवाज मे—'अमर जन्म बनता मरण की कथा से'—और आज तुम मरकर अमरता के सूखे कंकाल को भी जिन्दगी देने चले गए। हम दर्द लेकर घुटते रहे। तुम्ही ने छना।

अस्थि-विसर्जन देखकर, संगम के मंच पर बैठे, अनेक नेताओं के दर्द की अनुभूति करके, लौट रहा था। मुझे लग रहा था, शायद मैं पुण्य लुटाकर घर लौट रहा हूँ। प्रतिमा-विहीन मन्दिर में, खाली हाथ पतवार थामे! कुंभ-रहित होकर पनघट जा रहा हूँ और नौका अभी-अभी मँझधार में छोड़ कर आ रहा हूँ—'हम खाली हाथ लिए पतवार सभी लौटे। भारी मन, बोझिल तन।



और उस एक महीने की पीर को, घुटन के दर्द को, कह गया हूँ वतन के उस बेटे के लिये, जो लाखों-करोड़ों का था, सबका था। वाणी के दो-चार फूल।

कर्मठ, जागरूक और निर्भीक तुम थे।

तूफान तुम थे। इन्क़लाब तुम थे। शांति के चिराग तुम थे न? तुम सबके आसमान। संकीर्णता की गलित रूढ़ियों को तोड़कर सोमवती-जुन्हायी लेकर उदित हुए, अमृत-पुत्र की तरह। नयी पीढ़ी की नयी आकृति लेकर; और मैं उस पीढ़ी में जन्मा हूँ, उसका एक नागरिक हूँ, जिसका एक वतन है। दुनियाँ मानती है उसे। उस वतन के राजहंस थे तुम। "मसीहा वतन के।" वाणी के ये दो चार फूल स्वीकार लेना। तुम्हें रेख नहीं पाया। लकीरें छोटी हो गईं शब्दों की। बस, यह जैसा भी है, देश की जनता का है, उसकी जन-भाषा का है, सामान्य-जनता की भाषा का है, जिसके तुम भी थे। तुम जवाहरलाल!

—डॉ० हरीश

आमुख

डॉ0 हरीश की कृति "वतन का मसीहा" में मेरे पिता के आदर्शों की गुंजार है और ऐसी कृतियाँ वर्तमान तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए अपना महत्व रखती हैं। डॉ0 हरीश का यह प्रयत्न सराहनीय है।

इन्दिरा गांधी

(इन्दिरा गाँधी)

• अनक •

आशीर्वाद

श्री जवाहरलाल जी हमारे पथ प्रदर्शक प्रकाश [illegible]
रहे, नव युग के उस प्रकाश की [illegible]
[illegible] संभावनाओं के भी हैं। ऐसे महान युग-
पुरुष आज भी अपनी जीवनी के लिए [illegible]
प्रेरणा के स्रोतस्वरूप रहेंगे। डा. हरीश ने
जो [illegible] उनकी [illegible] उपलब्धियों में समाई
पंडित जी के प्रति प्रकट की है उनमें समस्त
देशवासियों के हृदय का स्पंदन तथा उनकी
भावनाओं की झंकार सम्मिलित है। वे [illegible]
डा. हरीश के हृदय की अगाध गहराइयों की
[illegible] से उपजी कृति हैं। [illegible]
नहीं, [illegible] के [illegible] अनुभवों के हृदय
को [illegible] करते हैं — जो
[illegible] लोकप्रिय पंडित जी
[illegible] तथा प्रभावशाली अनुभवों के
[illegible] हूँ। डा. हरीश को
के [illegible] हार्दिक बधाई देता हूँ।
[illegible] के लिए

(सुमित्रानन्दन पंत)

आशीर्वचन

[illegible] [illegible] [illegible], भारत की [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ही [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] भारत की [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible]
वाले हृदय की [illegible] था ।

डॉ. [illegible] ने अपनी [illegible] की [illegible]
[illegible] कर भारतीय [illegible] के भावों को [illegible]
की है । [illegible], [illegible] में [illegible]
की [illegible] जीवन [illegible] के [illegible] से [illegible]
हो सकता है । यह भावों की [illegible] [illegible]
पाठक के बुद्धि और हृदय को [illegible] [illegible]
[illegible], ऐसा मेरा विश्वास है ।

२८.३.६५

महादेवी

(महादेवी वर्मा)

श्रद्धांजलि



'ममीहा वतन का' कृति २५ अक्टूबर, १९८४ को ही छपकर तैय्यार हो गई थी। केवल आवरण छपना ही शेष रह गया था। हम सबने सपना सँजो रखा था कि इसका विमोचन १४ नवम्बर को इन्दिरा जी के हाथों करायेंगे, पर ईश्वर को यह स्वीकार न था। हमारी उस महीयसी प्रधान मंत्री की ३१ अक्टूबर १९८४ को प्रात. निर्मम हत्या कर दी गई। दीपशिखा रक्त की अंतिम बूँद-बूँद देकर आजादी का सिंगार कर गई। अमन की मसीहा, देश की एकता और अखण्डता की प्रतीक, हमारी विश्वविख्यात कीर्ति की निधान-कलश प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी को नियति ने हमसे छीन लिया। सपूर्ण विश्व शोकाकुल हो गया। पूरे भारत मे शोक और बारूद का धुँआ भर गया। रक्षक ही भक्षक निकले। अमन का आफताब, स्वस्ति का गुलाब, लोक-मंगल की विभूति, तीसरे विश्व की प्रेरक, गुट-निरपेक्ष और अविकसित राष्ट्रों की आशा शेष हो गई। गुलाब की पाँखुरियाँ बारूद की आग में झुलस गई। वक्त ने उन्हे ईसा, सुकरात, महात्मा गाँधी और किंग लूथर जैसे अमन के रक्षकों की प्रथम पंक्ति में अमर शहीद बनाकर स्थापित कर दिया। उनका बलिदान इतिहास में कालजयी हो गया।

शोक-संविग्न-मानस, मैं, हृदय की अगाध श्रद्धा और अखूट-ममता से उस महान आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

—डॉ० हरीश

समर्पण

देश की एकता और अखंडता की प्रतीक,
अमन की दीपशिखा, अमर शहीद
स्वर्गीया प्रधान मंत्री, श्रीमती
इन्दिरा गाँधी को
समर्पित—

जवाहरलाल नेहरू

'उसके हस्ताक्षर अमिट काल की छाती पर'

—डॉ० हरीश



श्रद्धांजलि

वतन तुम्हें प्रणाम है

सुवह का रूप सूर्य है, सलोना चाँद शाम है
वहार धूप में तेरे, किरण तेरी ललाम है
वलन्दियों को चूमती, तेरी अमर कहानियाँ
मेरी विजय के कारवाँ ! वतन तुम्हें प्रणाम है !

सुनहले खेत है तेरे, सदा-वहार नाम है
हरेक ईंट ही तेरी, महान तीर्थ-धाम है
किया है खून से तिलक, औ' प्राण भेंट में दिये
झुकाएँ शीश को सभी, वतन ! तुम्हें प्रणाम है !

हवाएँ मलयजी चलें, रुपहली तेरी घाम है
यही हमारा वुद्ध है, यही हमारा राम है
समग्र विश्व टेरता, शुमार प्यार का नहीं
मनुष्य-धर्म है तेरा, वतन ! तुम्हे प्रणाम है !

अधर अधर पै नाम है, तेरा शवाव जाम है
लहर लहर लुभावनी, औ' हिन्द तेरा नाम है
किया सिगार तूने ही, विराट ब्रह्म से यहाँ
महान तू, उदार तू, वतन तुम्हें प्रणाम है !

असंख्य प्राण-गीत औ' दुलार से सलाम है
ये छन्द-फूल, प्यार की पुकार से गलाम है
हमारे स्वप्न-सत्य का, चिराग तू ही है अमर
हमारे लाड़ले महन, वतन तुम्हे प्रणाम है !

□

युग पुरुष ! देश के कर्णधार !

तुम जिधर चले मौसम बदले,
निर्माणों के सपने मचले,
हर ओर मांगलिक दीप जले
तुम थे भारत की नव बहार

तूफ़ानो से टकराते थे
साहस लेकर मुस्काते थे
सबमे विश्वास जगाते थे
बनकर कर्मठ और दुर्निवार

तुम कर्मरती बनकर आये
तुम भीष्मव्रती बनकर छाये
जिस ओर जुटे दृढ़ता लाये
सबके सपनों में निर्विकार

सकट आया तुम बोल उठे
अत्याचारों मे खौल उठे
सबकी ममता को तौल उठे
हे जन नेता ! हे युगाधार !

हे भारत मां के सेनानी !
तुम में कितना सच्चा पानी
देकर खुद अपनी कुर्बानी
तुमने पाया माँ का दुलार

जब तक होगे चंदा तारे
सूरज दीपक से अंगारे
तुम होगे भारत को प्यारे
युग पुरुष ! देश के कर्णधार !



नर-नाहर नेहरू नहीं रहे

आवाज लगाता हूँ लेकिन
नर-नाहर-नेहरू नही रहे

हे धरती के बेटे ! तुमने
माँ के सुहाग को अमर किया
भारत के प्राण ! तुम्ही ने तो
सैनिक शहीद सा जन्म जिया
विद्युत् सी ध्वनियाँ फैल गई
भारत भर, नेहरू नही रहे

जल में रहकर भी दूर रहे
जल-वैभव की काराओं से
जन जन के शांति-दूत बनकर
तुम चमके अग्नि-शिखाओं से
सारे जग के बन ज्योति-गीत
प्रण-सागर नेहरू नही रहे

बनकर स्वतन्त्रता के प्रहरी
तुम अडिग रहे हिमगिरि जैसे
तन प्राण और धन अर्पित कर
तुम जुटे सूर्य बनकर कैसे
सबको प्रदीप्त करने वाले
घर बाहर, नेहरू नही रहे

धरती का कण कण है तुममें,
तुम धरती के कण कण में हो
जो मानवता को प्यार करे,
तुम उन सबके प्रण प्रण में हो
वे सूत्र यहाँ है सुदृढ मगर
धरती पर नेहरू नही रहे

सुख की बलि देकर ही तुमने
दर्दो का आँचल थाम लिया
काँटो के पथ पर चलने का
तुमने आगे बढ़ काम लिया
वह यश-शरीर तो अमर हुआ
धरती पर नेहरू नही रहे



तुम थे भारत के मनु महान

युग की "श्रद्धा" यह कहती है—"तुम थे भारत के मनु महान्"

चिन्गारी बो कर उद्घोषित
आजादी का संग्राम किया
तुमने सारा विप्लव बदला
समरसता में विश्राम लिया
जन जन की समता-ममता में, प्राणो का यह परमाणु-दान

यह स्वर्ग, मृत्यु, पाताल सभी
कहते—'तुम शान्ति निदेशक थे'
तुम इच्छा, ज्ञान, कर्म वाले
संगम थे खुद उपदेशक थे
आनन्द और आलोक लिये, झंकृत है तेरा कीर्तिगान

सीमा का सारस्वत प्रदेश
किसके साहस से घबराया
तुमने ही शख फूँक करके
अपने दुश्मन को थर्राया
तुम पर न्यौछावर था नेहरू ! वीरों का सारा स्वाभिमान

नूतन-जन-संस्कृति को तुमने
युग मानव का अनुदान दिया
भावी इन नयी पीढ़ियों को
तुमने वरिष्ठ भगवान दिया
तुम सा नर-नाहर पाकर के, इतिहास हो गया प्राणवान

जड़ कहता तुममे थी सत्ता
तुम जिदादिली जवानी थे
चेतन था तुम पर न्यौछावर
तुम सबको एक कहानी थे
ओ सत्यं शिवं सुन्दरम् ! तेरा भारत मन्वन्तर महान्

□

भारत का वह राजहंस !

भारत का वह राजहंस किस निद्रा में सोया ?

अभी अभी जो मानसरोवर में लहराता था
गहरे मे खोजाता केवल मोती लाता था
जो हिमगिरि के आँगन में मुस्काया करता था
वनपांखी सा वनफूलों मे गाया करता था
मौन हो गया आज वही किन सपनों में खोया ?

जोड चला हर तार तार को माँ का अनुगामी
छोड़ चला मानस का आँचल वह प्रण का स्वामी
बादल का बिजली का तूफानों का प्यारा था
सदा जागने वाला विप्लव का अगारा था
रहता था जो सत्य अहिंसा से दूधों-धोया !

हर उड़ान मे जाने कितना प्यार ले गया था
अखिल विश्व को स्नेह, शांति-सन्देश दे गया था
उसके पंखो मे अनन्त गति तूफानों वाली
स्फटिक शुभ्र-वसन, वह था, हर मौसम का माली
मेरे प्रजातत्र का अन्तस् फूट फूट रोया !

अरे अस्थियाँ उसकी गगाजल सी पावन हैं
उसकी साँसे कामधेनु जैसी मनभावन है
'काम अधिक, कम बात करो', यह उसका नारा था
विश्वबंधु वह ज्योति-दूत ! आँखों का तारा था !
उसके कण कण को भारत ने खेतो में बोया



वह विराट व्यक्तित्व हमारा

अर्चन का आधार बन गया, वह विराट व्यक्तित्व हमारा

जिसके हाथों में मशाल हो
सत्, संयम, सौंदर्य, त्याग की
जिसकी बातों में मुखरित हो
जागृति-वेला मेघ-राग की
मंज़िल बनकर अमर हो गया, वह माँ की आँखों का तारा

दीप्ति शांति की मुस्कानों से
वह आलोक बाँटता आया
टूट गया कच्चे दर्पण सा
जो भी उससे आ टकराया
सारे जग को दिया, अहिंसा का जिसने बेजोड़ सहारा

कुटिया से लेकर सत्ता तक
उसने सबको गले लगाया
शोषण की कारा को तोड़ा
ममता का संदेश सुनाया
ऐसे बहता रहा कि जैसे गंगा की पावन जल-धारा

दर्प और हिंसा को जिसने
जीवन का अभिशाप कहा है
जो पर-पीड़ा, ताप न जाने
उनको उसने पाप कहा है
सत्य, अहिंसा, सदाचार से, सदा रहा जो जग को प्यारा

उसका काव्य जहाँ भी गूँजे
सदा वहीं पर ज्योति जलेगी
ईति-भीति आतंक न होगा
ममता, माया, प्रीत पलेगी
पुण्य-भूमि भारत का जो था, कर्मरती प्रज्वलित अँगारा

□

सुर्ख़ीला गुलाब

वह कश्मीरी घाटी का सुर्ख़ीला गुलाब

हमने जिसको आँखे निचोड कर सींचा था
फूलों का मौसम जोड जोड कर सींचा था
वह खून पसीना बनकर वहा बहारों का
केसर की घाटी का, वह मेघ मल्हारों का
बंशी का स्वर, वह लोक गीत जैसा पावन
वह कृपकों की आँखों के दर्दों का सावन
वह बर्फानी शिखरों का, पाहुन पलकों का
माथे का मलयज या आभूषण अलकों का

मुर्झाया कैसे वह मोती का रग आब

लाखों का बेटा, भाई रहा करोड़ो का
कुटिया गलियो, कूचो, चौराहो, मोडो का
वह सत्य पारदर्शी-सपनों का स्रष्टा था
वह भारत के सुदूर भावी का द्रष्टा था
वह खेतों का, मेडों का धानी आँचल का
कजरारे मेघो का, जमुना गंगा जल का
वह ऐसा उगा, कि सूरज जैसे पूरब मे
उसकी खुशबू की किरणे चमकी हम सबमें

वह माई का, बाबा का बापू, का शबाब

वह श्वेत कपोतों का प्रतीक नर-नाहर था
शृंगार तिरगे का, वह नूर जवाहर था
सबका महबूब अकेला, एक सिपाही था
मित्रों का मित्र और दुनियाँ का भाई था
वह प्रहरी लक्ष्मण सा, बादल ललकारों का
वह भीष्म पितामह! अर्जुन था जयकारों का
वह अभिमडित वन्दिशो से था, स्वय वतन
तूफानो का, बिजली का, लहरों का प्रियजन

अगिन गीतों का धूपदीप है आफताब !



धरती माँ का हिल गया हिया

अम्बर के आँसू ढुलक पड़े, धरती माँ का हिल गया हिया

वह काली रात मई की थी
बीसवीं सदी का था दुर्दिन
बादल अँधियारे के उमड़े
तूफ़ान उठ रहे प्रति-पल छिन
अनचाहे हमसे क्यों विधि ने, युगवीर जवाहर छीन लिया ?

प्रतिदिन जो मुस्काता जी भर
डाली डाली का हर गुलाब
वह आज पड़ गया है काला
रोया जी भर भर कर गुलाब
छाती फट गई दिशाओं की, आहों से भर भूकम्प दिया

माँ पर संकट के तूफ़ाँ थे
क्यों भरी दुपहरी घर लूटा
कैसा यह वज्र गिरा हम पर
भारत का ध्रुव-तारा टूटा
हे स्वतन्त्रता के ज्योति-पुरुष ! किसने दीपक निष्प्राण किया ?

हे शांति-दूत ! तुम जहाँ गए
मुस्कानों के उड़ते कपोत
तुम शम-दम-दड विधायक थे
कुर्बानी बनकर जली जोत
इस वज्रपात को आँसू के समदर में हमने भरा पिया

तुम लौकिक नहीं, अलौकिक थे
हे शांतिघाट के अधिवासी !
श्रद्धा के स्वर लो महाप्राण !
हे करुणमूर्ति ! हे विश्वासी
बन बुद्ध आधुनिक भारत के, तुमने जग में अमरत्व जिया

□

उसके हस्ताक्षर

उसके हस्ताक्षर अमिट काल की छाती पर

यों भले सिमट जाए रेखाओं में अतीत
या वर्तमान को कोई अक्षर पल भर दे
यों भले किताबों के पन्नों में सोजाए
वह इन्कलाब कोई हमसे ओझल कर दे
पर जो घुल जाय हमारे साँझ सवेरों में
जिसकी यादों से अधरों में मुस्कान पले
जो उफने सबकी साँसों पर सावन बनकर
जिसकी अनुगूँज हमारे दर्दों में पिघले
वह सुबह जीत कर लाया एक प्रभाती पर

हर बोल उसी का उज्ज्वल बन अभिसिक्त हुआ
हर बात अनूठी अक्षरता को साथ लिये
शब्दों के साँचे में सपने गढ़ने वाला
अमृत सबको देता था, खुद ने ज़हर पिए
उसका हर स्वर संकल्प साधना में डूबा
उसका हर इंगित कर्मरती की गीता है
जिसने क्षण क्षण का काल कलम से बाँध लिया
सारी दुनियाँ का प्यार उसी ने जीता है
रोशन है लाख चिराग उसी की बाती पर

यह राज सभी पर नहीं खुला, अब तक भी है
मंजिल बनने की आग कहाँ से लाया था ?
वह साज उसी की सरगम से आलोड़ित है
उनमें तूफाँ का राग कहाँ से लाया था
शायद सबके विश्वासों में उसकी निष्ठा
या सत्य अहिंसा ने हो उसको था टेरा
या कहूँ उसी के कर्मों की पावनता ने
उसको रूपायित करके भारत को घेरा
लिख गया काल का जयी समय की पाती पर



सबका कुंज कुटीर जवाहर !

लोक चेतना के व्रतधारी
जन-जागृति के मूर्त पुजारी
बात रह गई शेष तुम्हारी
—हे गंगा के नीर जवाहर !

दीप जलाकर शांति प्यार का
सत्य अहिंसा के दुलार का
मौसम लाए तुम बहार का
—सुरभित मलय समीर जवाहर !

उड़ी विश्व तक कीर्ति-पताका
पुलक उठी पूजा की राका
इस समाजवादी जनता का
—प्रण सागर गम्भीर जवाहर !

लिये अखण्ड एकता आया
बापू के सपनों की छाया
कभी न तुममें व्यापी माया
—तपी विरागी धीर जवाहर !

अरे सिंहनी का वह जाया
मां को सब अर्पित कर आया
समरसता का जाल बिछाया
—तेरी अमिट लकीर जवाहर !

नया भविष्य बनाने वाला !
भारत को चमकाने वाला !
प्रजातंत्र-रथ का रखवाला
—सबका कुंज कुटीर जवाहर !



मेरे देश के रहबरो!

मेरे देश के रहबरो! तुम बनाओ, हिमालय सा नेहरू कहाँ मिल सकेगा?

अमिय-वृष्टि हो बादलों से भले ही
ये हीरे औ' मोती भी धरती उगाएँ
भरे सूर्य किरणों में सौरभ की साँसें
या नंदन से वन हिन्द पर मुस्कराएँ
करोड़ों खिलेंगे ये फूलों के मजर, वह पूजा का पाटल कहाँ खिल सकेगा?

भले स्वर्ग-अपवर्ग भारत को पूजे
अमरता भी आकर लुटाए जवानी
नहीं चाहिये, नंदिनी काम-कामद
नहीं इनमें कोई जवाहर का सानी
कज़ा तू है बहरी, कलेजा है पत्थर, कहे तो भी तेरा क्या दिल हिल सकेगा?

महल में पला, पर रहा झोंपड़ी का
था जिन्दादिली का वह मौसम अकेला
वह प्यारा था ऐसा, हमें जैसे "जनगण"
उसी ने लगाया शहीदों का मेला
चले जा रहे जब सभी स्नेह-पथ पर, कहो कारवाँ क्या हमारा थकेगा?

मेरी आँख के सामने से हटालो
करोड़ों के नयनों से बरसा है पानी
अरे ओ वतन के सिपाही जवाहर!
लो श्रद्धा में डूबी है तेरी कहानी
मेरे हिन्द का हिमालय गल गया है, मेरा घाव कोई नहीं भिल सकेगा?



धरती का ध्रुवतारा टूटा

सूरज ढलने से पहले ही धरती का ध्रुवतारा टूटा

वह ध्रुवतारा जो अमिट समय की छाया पर
वह अटल हिमालय सा अम्बर की काया पर
वह हिले अगर तो धरती का रथ डोल उठे
वह डुले अगर तो सात समन्दर खौल उठें

ध्रुव सिंहासन होकर के भी, उसका संयम कैसे छूटा ?

वह विश्व कल्पना जैसा ऊँचा रहता है
वह किरणों वाला दीप तिमिर में बहता है
वह शांत हिमानी सा है, वह है यश शरीर
वह शिव पावन ऐसा, जैसा जाह्नवी नीर

किसने धरती में आग लगा, उसके सुहाग को है लूटा ?

वह आदर्शों का है प्रतीक सारे जग का
वह माया ममता का धन, सबकी रग रग का
वह चलता फिरता, विश्वासों का सागर था
वह कोहनूर की आब, उदार जवाहर था

निर्माणों का वह भारत भाग्य-विधाता हमसे क्यों रूठा ?



उठ गया दूसरा बुद्ध हमारे हाथों से

वासन्ती आँगन में जैसे
फूलों की सूख गई काया
किरणें मुरझाई सूरज की
मँडरायी यह कैसी छाया

तन को धोया है आँसू की बरसातों से

उसने हम सबके लिये यहाँ
वैभव त्यागे, दुख दर्द जिए
सारे जग को करुणा बाँटी
हाथों में ममता-दीप लिए

वह टूट गया, पर झुका नहीं आघातों से

बीसवीं सदी का युगाधार
वह सत्य अहिंसा का प्रतीक
इतिहास लिखेगा ओ नेहरू !
तुम खींच गए हो अमिट लीक

क्यों पूर्ण-चंद्र छीना पूनम की रातों से

आओ हम सब उस ममता के
साधक की पूजा ही कर लें
जिसने माँ को बलिदान दिया,
अर्चन कर अपना जी भर लें

उसका सपना क्या पूरा होगा बातों से ?



बापू के सपनों का भारत

तूने ही तो निर्माण किया, बापू के सपनों का भारत

जिस सन्यासी ने अंग्रेजी
शासन से टक्कर खाई थी
आजादी के दीवाने ने
सबको आवाज लगाई थी
शृंगार किया तूने नेहरू ! बापू के वचनों का भारत

हिल उठा विदेशी सत्ता का
सिंहासन बापू के भय से
जब गूँज उठा अम्बर सारा
गाँधी की वाणी की जय से
अनुराग दिया तूने उसको, उनके पदचिह्नों का भारत

जिस सत्य अहिंसा के बल से
हमने आजादी पाई है
मँहगी कुर्बानी दे देकर
माता की लाज बचाई है
जी भर के प्यार किया तुमने, फूलों के चमनों का भारत

दिल्ली के लाल किले पर जब
गाँधी ने ध्वज को रोपा था
तुमको अनुगामी विश्वासी
समझा, सत्ता को सौंपा था
तन मन से सेवा की तूने, बापू के नयनों का भारत

भारत को प्यार दिया तूने
तू भारत माँ को प्यारा था
शोषक के लिये सदा नेहरू
तू जलता एक अंगारा था
आजादी को पूजा समझी, तेरे नव यत्नों का भारत....



भूमि का बेटा अजन्मा हो गया है

विश्व को था नाज जिसकी दोस्ती पर, मित्रता का मूर्त रूपक खो गया है

कह रही दुनियां तुम्हारा प्यार पाकर
रुक गया है शांति का बेजोड़ सरगम
स्नेह का मधुमास, यौवन मित्रता का,
क्रांति औ' सम्मान का साकार परचम

एक होकर भी सभी का था जवाहर, आज होकर मौन कैसे सो गया है

जो सदा शोला रहा था जागरण का
आज केवल राख में बदला हुआ है
वतन की मनुहार पर चमका सदा जो
सूर्य सा सैनिक कहाँ बहला हुआ है ?

देश की सब पीर पीकर के स्वयं वह, दर्द सबका आँसुओं से धो गया है

शांति के सन्देश वाहक ये कबूतर
आज चुप है, गम उदासी को पिये है
ज्योति का उद्गीथ जैसे सो गया हो
जल रहे उसके जलाये ये दिये है

कोटि शिशुओं को धरा पर जन्म देकर, भूमि का बेटा ! अजन्मा हो गया है



ओ तपे हुए कुन्दन!

मेरे भारत के जागरूक प्रहरी मानव! तुम ऐसे तपे, तपे जैसे कुन्दन

कितने आकर्षण के अम्बार घिरे तुम पर
कितनी रातें बेचैन रहीं तुमसे मिलने
तुमको बहलाना चाहा वैभव गरिमा ने
मादक सपनों के रेशम की कलियाँ खिलने
तुम रहे हिमालय जैसे अडिग सदा से ही, सबके प्राणों के प्यारे जन गण मन

दो दो पीढ़ियाँ तुम्हारे कधों पर खेली
आजादी के शृंगार तुम्हारे किये हुए
माँ की इस देश प्रेम की थाती के स्वामी
धरती को पूजा प्यार तुम्हारे दिये हुए
ओ संकल्पों के साधक! दीवाने साथी! अर्पित कर दिया देश को तन मन धन

तुमने आरती जलाई मन्दिर मन्दिर में
जन जन को क्रान्ति-किरण के सावन तोले हैं
कुर्बानी से इतिहास बनाया है तुमने
वाणी में समरसता के सागर घोले हैं
तुमने स्वतन्त्रता को साँसों से पी डाला, सारी दुनियाँ के जीवित रूप अमन

तुमने जो पहले शान्ति कपोत उड़ाये थे
सत् और अहिंसा के सन्देश लिये अब भी
तुमने पतवार चलाई, जिन मँझधारों में
वह कश्ती सारे सपने शेष लिये अब भी
इस मरण-कथा ने तुम्हें अमर कर डाला है, तुम श्रद्धा के ज्योतिर्मय विद्युत् घन



फूल बिछाने वाले

कांटो मे चलकर सबके पथ में फूल बिछाने वाले !

तुम उठे करोड़ों हाथ उठे
जैसे पुरवा के बादल हों
तुम जुटे अनेकों हाथ जुटे
जैसे पुष्पों के पाटल हों
सोये भारत के प्राणों में आन्दोलन लाने वाले !

तुम रुके सभी के हाथ रुके
जैसे कारवां न चल पाए
तुम झुके सभी के शीप झुके
जैसे यह शमा न जल पाए
दु:ख दर्दों के तूफां में भी हँसने मुस्काने वाले !

तुम रोये, तो हम सब रोये
जैसे अम्बर से अश्रु झरे
तुम सोये, तो दुनियां सोई
जैसे जड़ता से सृष्टि भरे
मां के माथे पर देशभक्ति का तिलक रचाने वाले !

तुम शेष हुए, सब शेष हुए
जैसे बाती का नेह खुटे
तुम बीत गए, सब बीत गए
जैसे उपवन की गंध लुटे
सारी दुनियां के चुम्बक आकर्षण बन जाने वाले !



अमरत्व तुम्हारा अनुगामी

क्या स्वर्ग और अपवर्ग तुम्हें, अमरत्व तुम्हारा अनुगामी

वह स्वतन्त्रता की दिव्य किरण
वह थी विप्लव की किलकारी
वह 'लाल', 'बाल' का सपना था
वह थी बापू की चिन्गारी
ले "जन गण मन" का मेरुदण्ड, तुमने सत्ता की गति थामी

कैसा व्यक्तित्व हिमालय था
जो भी टकराया टूट गया
वह स्नेह तुम्हारे नयनों का
कोई क्यों हमसे लूट गया
सारी दुनियां यह कहती है, तुम थे मानवता के हामी

तुम कैसे आशावादी थे
तुमने न कभी झुकना सीखा
आँधी पानी तूफ़ानों में
तुमने न कभी रुकना सीखा
ओ फौलादी मानव नेहरू! तुम सदा रहे शासक नामी

हो जाये जीवन-मय तुमसे
सूखा कंकाल अमरता का
तेरे तप से हो भस्मीभूत
जो दानव है बर्बरता का
हे भारत के संसृति-गौरव! तुम पूर्णकाम पर निष्कामी



रामायण सी कथा तुम्हारी

नगर नगर घर द्वार द्वार में रामायण सी कथा तुम्हारी

कुटिया का रोशन चिराग़, महलों का सूरज
पतझड़ में मधुमास, तपिश के लिये हिमानी
अँधियारे के लिए ज्योति, सागर की सीमा
ज़िन्दादिली समेटे तेरी रामकहानी.
अक्षर अक्षर स्वर स्वर छाई, मर्यादा सौम्यता तुम्हारी

सौ सौ सुख पाकर भी उनसे विमुख हो गए
लगता जैसे तुमको यह बनवास मिला था
तुमने मर्यादाओं से सागर को बाँधा
जन जन की ममता का हर आभास मिला था
डगर डगर में अमर रहेगी, सदियों तक सभ्यता तुम्हारी

तुम सयम के राम, शील से तुमने जीता
बालक से लेकर बूढ़े के अन्तस्तल को
बद्री के मन्दिर जैसी पावनता लेकर
विजय किया शोषण के रावण के छल बल को
ग्रामराज्य में रामराज्य की, छिपी हुई थी व्यथा तुम्हारी

जहाँ चले तुम वही कारवाँ कोटि कोटि का
विश्वासो की ज्योति जगाने जन मानस में
जन्मभूमि पावन प्रयाग, यह ज़मी अवध की
लीलास्थली तुम्हारी, गंगा ज्योति-कलश में
मरण तुम्हारे चरण छू रहा, सभी पड़ी सम्पदा तुम्हारी

लक्ष्मण-रेखा लाँघ हिमालय पर चढ आया
सूपनखाँ दुश्मन होकर महिरावण जैसा
तुमने भारत माँ दुर्गा का खप्पर भर के
पाठ पढ़ाया दानव को देकर सन्देशा
अब तक भी वह सिसक रहा है, लिये मृत्यु की मूक खुमारी

शील और औदार्य्यमयी युग की मोना को
जब भी कोई बर्बरता-कर्मी हर लेगा
पौरुष के मारे सागर तब खौल उठेंगे
युग का तुलसी उसको अपना हर स्वर देगा
तीर्थ हो गई है भारत में, तीनमूर्ति की यह फुलवारी



महबूब जवाहरलाल था

माई ने रोकर नदी बहादी आंसू की,
महबूब वतन का एक जवाहरलाल था

वह दरिया एक समन्दर बन, उमड़ा भावनी उभारों में
कजरारे मेघों का रहबर, वह गूँजा मेघ मल्हारों में
उसने ले जाकर कश्ती को छोड़ा मंजिल मँझधारों में
वह जहाँ गया, तूफान गया, झंझा के कूल कगारों में

उसकी हर बात प्रतिज्ञा थी ललकारों की,
रहनुमा हमारा बहुत बड़ा इक़बाल था

वह अग्नि अचियाँ क्या उसको, यों पचा सकेंगी अन्तस् में
साँसों में घुला सभी की जो, वह रक्त बन गया नस नस में
जो स्वयं आग था जीवन की, उसको क्या आग जलायेगी ?
जो सदा हिमालय बना रहा उसको क्या मृत्यु गलायेगी ?

वह विश्वबंधु बेटा था भारत माता का,
वह हिंसा का जीवित जिन्दादिल काल था

वह शिवा प्रताप अमन का था, उसने न कभी सीखा झुकना
अत्याचारों का दमन किया, उसने न कभी सीखा रुकना
वह सदा जरा से मुक्त रहा, वह यौवन का बन्जारा था
घाटी के मेघों सा झूमा, वह चरवाहे सा प्यारा था

वह शिशुओं का गुलसिताँ, बहारों का मौसम,
वह पैदायशी हिन्द का एक कमाल था

वह था धनवान सियासत से, पैगाम शान्ति का देता था
दुनियाँ के झगड़े निवटाता, लहरों में नैय्या खेता था
उसका हर हाथ मैत्री का, उसका उद्देश्य सुलह का था
वह था प्रतीक मानवता का, वह सुर्ख़ गुलाव सुबह का था
कुछ ऐसी लगन रही उसको अपने प्रण की,
यह सेवा की दौलत से मालामाल था

लो साँस तोड़ दी जीवन ने, जब उसकी धड़कन बन्द हुई
वह एक जनाजा आशिक का, उसकी हर गाथा छन्द हुई
शैदाए-वतन वह था अपना, उसका हमसर कोई न मिला
मालिक था वही क़ाफ़िले का उससे न किसी को रहा गिला
वह एक रहम दिल साधक हिन्द वतन का था,
यह भारत था, उसकी बेजोड़ मिसाल था

शब्दों की हर लकीर

वाणी से तुमको बाँध रहा, पर सच मानो,
शब्दो की हर लकीर छोटी हो जाती है

तुम स्वय भारती के थे सच्चे वरद पुत्र
यह दुनियाँ का इतिहास गवाही देता है
तुमने जाने कितने क्षण सत्यो से खेला
तुम रोशन हो कहता युग का अध्येता है
जो चिर परिचित उसका मैं कैसे परिचय दूँ,
लगता मेरी सारी संज्ञा खो जाती है

सागर जैसी गहराई तुमने पाई है
सबके दर्दो को समझा है तुमने अपना
ओ युग-युग को वाणी देने वाले मानव !
तुमको आता था केवल कुन्दन सा तपना
तुमने दी अग्नि-परीक्षाएँ जाने कितनी,
गुनता हूँ तो चेतना कहीं सो जाती है

मुझको हर शब्द अधूरा जैसे लगता है
कैसे तुमको रूपायित कर दूँ, अक्षर हो
तुमको कैसे विश्लेषण दूँ, खोलूँ कैसे ?
तुमतो सारी धरती के पूरे अम्बर हो
यह नादमयी रागिनी तुम्हारी कीर्ति-कला,
सबके चित्रों के रगों को धो जाती है

हे विज्ञ-मनीषी ! तुम मेधा के स्वामी थे
विष पीकर भी अमृत का बोध किया तुमने
ओ स्रष्टा ! कुशल चितेरे ! जनमानस के तुम
जीवन मन्थन का सागर शोध लिया तुमने
अब तो केवल यश की काया ही शेष रही,
तुम नही रहे यह सोच आँख भर आती है





जागरण

न हन्यते हन्यमाने शरीरे

तुम्हारे निधन पर सुनाती है गीता—"न हन्यते हन्यमाने शरीरे"

निकल चल पड़ा आज हंसा अकेला
यह तस्वीर खाली पड़ी रह गई है
या बदला है तुमने क़फस जिन्दगी का
लगी आंसुओं की झड़ी रह गई है
बनी पांच तत्त्वों से देही तुम्हारी, यह सागर उमड़ कर चला जमुना तीरे

चदरिया तुम्हारी बिना दाग वाली
जवाहर ने ओढी, सँभाली जतन से
पुराणों की वाणी—"अमर आत्मा है"
कहाँ चल दिये तुम हमारे वतन से ?
पिये ग़म बताओ, किए आँख नीची, कहाँ को चला कारवाँ धीरे-धीरे

सुनाकर यह—"वासांसि जीर्णानि" हमको
लिये छीन हमसे, अरे बुद्ध गांधी
"न छिन्दन्ति शस्त्राणि" कहते ही कहते
बहुत उठ चुकी है, यह मरघट की आँधी
भरे मेघ खेती हमारी है सूखी, नहीं फूल हँसते हैं सुरभित समीरे

सुना जब सभी ने जवाहर नहीं है
चली पोंछने सबके आंसू यह गीता
मगर ओस पी के बुझी प्यास किसकी
बिना स्नेह दीपक है जीवन से रीता
हुआ शेष अपने सितारों का ध्रुव है, बिना रोशनी है, ये कुंजें कुटीरे



मसीहा वतन का

सभी संकटों के अंधेरे में हमको, वतन का सिपाही जगाता रहा है

अंधेरा लिए दासता की घटाएँ
बुलन्दी में फैला गुलामी का आलम
हमारा सभी लूट डाला गया था
यह वाणी का संयम, यह आँखों का शबनम

जला बिजलियों से मशालें हमारी, दमन मुस्कराहट से लाता रहा है

हुआ देश आजाद कुर्बानियों से
ये नींवों के पत्थर अमर हो गए हैं
कफन सिर पै बांधा, मरण को पुकारा
वतन के चरण में सभी सो गए हैं

वसीयत सभी सिर चढ़ाकर सँभालो, सितारा वही जगमगाता रहा है

वह बगिया का माली, नये फूल लाया
उसी की सभी में, सही रोशनी थी
नयी योजनाएँ, नयी ये हवाएँ
उसी की बदौलत, नयी रोशनी थी

सभी को जगाकर जो खुद सो गया है, मसीहा वतन का कहाता रहा है



तुमने काता इतिहास

हर तार तार को मिला मिला मानवता का,
तुमने काता इतिहास सूत के धागों से

ये कच्चे धागे नही नेह के है बन्धन
आज़ादी का इतिहास इन्ही से बुना हुआ
इनके हर सूत्र सूत्र मे भारत के सपने
बापू से इनका हर प्रण हमने सुना हुआ

इनके हर स्वर का सारा सरगम अद्‌भुत है,
वह गया सँजोया जन-अर्चन के रागो से

मानव का प्यार अहिंसा से जीता तुमने
परचम लेकर सत्यता शाति का हाथों मे
किस तरह एक से ही अनेक बन जाते है
हर तारा भी रोशन अँधियारी रातो मे

इनमें राखी, दीवाली और दशहरा है,
रँग दिया इन्हें श्रम की होली के फागो से

ये चार युगों की सेवा के ताने-बाने
तूमने गूँथे है ममता की मनुहारो से
जनता-जनार्दन की कल्याण कामना ले
मन्दिर को पूजा मंगल की बौछारो से

तुमने जो चादर बुनी अखण्ड एकता की,
वह मुक्त रहो कल्मष के काले दाग़ों से



ओ इन्कलाब !

ओ इन्कलाव ! तेरे फोलादी हाथों में,
सारी दुनियाँ का अमन चैन से सोया था

तूने समझाये अर्थ जिन्दगी के सबको,
तू सदा जूझता रहा अनेक सवालों से
तूने जेलें काटीं, माँ के आँसू पोंछे
मुस्काकर निकला तू हर एक बवालों से
लेकर मशाल अँधियारे मे बढ़ने वाले !
तूने रातों मे बीज सुबह का बोया था

फूलों से कोमल होकर भी जो वज्र बने,
जाने कैसे वे हाथ बन गए तूफ़ानी
तूने हाथों में थामी वल्गा भारत की
तू वीर सारथी राष्ट्रप्रेम का अभिमानी
तूने जन जन में जमी दासता-कालिख को,
श्रम-सेवा औ' कुर्बानी बनकर धोया था

जो हाथ जमाने भर के नेता रहे सदा
वे कैसे निष्क्रिय हुए जवाहर बोलो तो ?
जो फैले राष्ट्र-संघ तक ऊँचे उठे हुए
ओ शांति दूत ! सोये क्यों आँखें खोलो तो ?
तू जिन्दादिल सन्तरी हमारे भारत का,
तूने ही जड़ को चेतन किया सँजोया था

अणुयुग की नाश पूर्ण गाथाओं को लेकर
जाने कितने झगड़े तूने सुलझाये थे
तेरे कन्धों पर जाने कितना वजन पड़ा
तेरे सबने कितने अहसान उठाये थे
सारी दुनियाँ का दिल कायल होकर साथी !
तेरी यादों में फूट फूटकर रोया था



वह रावी तट का शंख-नाद

सुधियों के दीप जलाता है, वह रावी तट का शखनाद

जब काली क्रूर घटाएँ, अत्याचारों की घिर घिर आई
तुम चीर मेघ-पट को निकले, बिजली ज्यों लेती अँगड़ाई
जब पराधीनता की आँधी ने, भारत मे विप घोला था
नारा "जयहिन्द" गुँजाया, जैसे वह जलता एक शोला था

जलियाँ वाले उस डायर को, अब तक भी सबको कथा याद

रावी तट का वह सम्मेलन, जब सत्ता से टकराया था
नस नस में कौंध गई बिजली, तुमने सन्देश सुनाया था
वह आन्दोलन क्या था, भारत का एक जागरण जल्वा था
अंग्रेजों की सत्ता के लिये, जवाहर जैसे नल्वा था

गीदड़ घुस आए हों जैसे, सिहों की सोती रही माँद

लेकर मशाल हे क्रान्ति-दूत ! तुमने हर बार पुकारा था
वह शंखनाद, वह अट्टहास, जैसे तुमने ललकारा था
माँ की विद्रूप दासता की, कालिख को, तुमने धोया था
बापू ने जिस आजादी का, बिरवा भारत में बोया था

तुमने ही खून पसोने से सीचा, पाला, दी उसे खाद

वह जनवाद का दलित दीन, जन जन में फैला पैला था
वह मजदूरों की जिन्दगी, जिसमें दिन रात दुःख होता था
समता-संदेश हमें दो, तुम सुनाए, नेहरू महान
जन जन के मुख से जाहिर हो, तुमने ही पहिनी शान-मान

उस विश्व-शांति की याद रहे, वह था दूजा का मोह-ज्वाद

दुखियों के जीवन में तुमने ही, उसे ज्योति-पट बना दिया
गया, अब घोर भारती में, मजदूर उसी का बना दिया
फिर शांति दीपिका का कुसुम, नेहरू जी का अभिषेक किया
दो कमल शरीर जवाहर ! तुमने देशभक्त का जन्म लिया

उस ज्योति-बिन्दु को प्राप्त कर, फिर भी नभ में चमक रहा चाँद



उसकी चुनौती : उसके सपने

लाख लाख नेहरू ललकारेंगे

पहले तो एक अकेला ही वह प्रहरी था, अब लाख लाख नेहरू ललकारेंगे

वह माँ का फ़ौलादी बेटा, मुस्कान बाँटता फिरता था
वह जिधर गया, दर्शन देने, लाखों भक्तों से घिरता था
हर सुबह नया, हर शाम नया, उसका हर काम हमारा था
उसका हर बोल देश का था, वह सबका नयन-सितारा था
उसके आदर्शों पर चलने का फ़क्र लिये, विश्वास हमें हम कभी न हारेंगे

वह नहीं रहा, तो यह न समझना, अब भारत में जान नहीं
वह नहीं रहा, तो यह न समझना, अब हममें सम्मान नहीं
वह मिट्टी के कण कण में है, इस बार फ़सल आने तो दो
वह लाखों में उग रहा यहाँ खेतों को फल लाने तो दो
मेरी हर माँ ने अपना नेहरू दे डाला, अब एक एक लाखों को मारेंगे

वह भले अकेला रहा मगर, लोहे के चने चबाता था
उसका हर एक इशारा ही, लाखों में जोश जगाता था
उसकी धरती पर आगे से, ओ दुश्मन ! आँख उठाना मत
भारत की सीमा-रेखा पर, अब जग लिये फिर आना मत
हीरे मोती से हमने उसको पूजा है, उसके प्रण पर प्राणों को वारेंगे

हमने सब कुछ दे डाला, पर सम्मान बेच कर जिए नहीं
हम उस धरती में जन्मे हैं, अहसान किसी के लिये नहीं
जिसको भी हमने मित्र कहा, उसको सिर देकर भी माना
हम हरदम मिटे उसूलों पर, अपनों को हमने पहिचाना
अब भारत का भविष्य उसके आदर्शों का, उसको गीतों से हम सिंगारेंगे



वतन के तिरंगे को झुकने न देना

भले ही समन्दर हिमालय डुबोले,
यह सूरज भी पच्छिम उगे आँख खोले
गिरें बिजलियाँ औ' प्रलय मेघ टूटे
भले रोशनी तम पिए साँस छूटे
मगर यह जला दीप बुझने न देना

शहीदों ने सींचा इसे खून देकर
चढ़ाया है सिर पर, चरण धूलि लेकर
यह माता की ममता को माथे उठाये
खड़ा है अडिग सत्य शिव को जुटाये
किसी की नजर इस पै उठने न देना

हरा रंग ध्वज को धरा ने दिया है
इसे श्वेत कर सत्य ने यश लिया है
यह केसर का रँग वीरता को बताए
अहिंसा लिये चक्र भी मुस्कुराए
सँजोयी अमानत को लुटने न देना

जवाहर ने इसको अमन से सँभाला
इसी ने किया सारे जग में उजाला
यह आजाद भारत का सपना सुहाना
न टूटे कभी भी यह खादी का बाना
अहिंसा का प्रण, इसको दुखने न देना

तिरंगा सदा आसमाँ चूमता था
यह नेहरू के हाथों बहुत झूमता था
यही प्यार बनकर है भारत से भेटा
यही तो है माता का सूरज सा बेटा
विजय-गीत इसको यों रुकने न देना



उसकी चुनौती—

हिमालय से

बोल नगराज ! शब्द शब्द से पुकार करूँ
या तुझे आँसुओं का ज्वार दे दुलार करूँ ?
तेरे यौवन पै लगी आँख कुछ लुटेरों की
इनको तोड़ूँ या शीश दे के तुझे प्यार करूँ ?

तू खड़ा मौन तेरे, द्वार पर लड़ाई है
छल के दुश्मन ने ही, यह खाइयाँ बनाई है
या तो करवट बदल, या एक पृष्ठ फिर लिख दे
देख, माता की आज लाज पै बन आई है

तोड़ यह मौन जवानों ने कसम खाई है
युद्ध वीरों की हुई मौत से सगाई है
इनको शहनाई से या खून से विदा दे दे
आज माटी ही जूझने को कसमसायी है



राष्ट्र वीरों से

फूल काँटों में पला करता है
दीप तूफ़ाँ में जला करता है
मेरी बगिया के दुश्मनो ! तुम्हें मालूम नहीं
मेरे भारत में तो फ़ौलाद ढला करता है

मेरे वतन को आँधियों ने ही तो पाला है
मेरे चमन को ख़ार ने बहुत सँभाला है
अरी ओ मरियल हवाओ ! लौट जाओ,
मेरे वतन के हर चिराग़ में उजाला है

मेरे हम उम्र साथियो ! उठो जवानी है
माँ के आँचल की तुम्हें लाज जो बचानी है
सुनो, बेशर्म दुश्मनों ने फ़सल रौंदी है
इनको लोहे की गोलियाँ तुम्हें चबानी है



ओ सीमा के पहरेदारो !

ओ सीमा के पहरेदारो ! पलक झपकना पाप है

मिली चुनौती जब से हमको
स्वाभिमान अँगड़ाया है
तुम्हें याद, तुमने ही
आजादी का मोल चुकाया है
दुश्मन ने उसूल तोड़े हैं
सबका खून उबाला है
भोला दिखता है ऊपर से
भीतर दिल का काला है
उठो दासता लेकर जीना बहुत बड़ा अभिशाप है

दुश्मन है बेशर्म साथियो !
माँ की लाज बचानी है
बद्री के मानस मन्दिर
जय की आरती जगानी है
अपनी माँ का ताज हिमालय
दौलत है अपनी सबकी
अगर न होते तुम शहीद,
तो लुट जाती इज्जत कब की
बोल रहा कण कण से अपना, नेहरू ही अमिताभ है

यों तो हम सब शांति उपासक
हिंसा के कट्टर दुश्मन
पर अपने "जन गण" पर हम सब
दे सकते हैं तन मन धन
देखो आँच न आने पाये
माँ के कीर्ति-सुहाग पर
विजयी विश्व तिरंगे के
अर्चन, ममत्व, अनुराग पर
पंचशील में रँगा हुआ, अपना सब कार्य कलाप है



बात नहीं, अब काम करो

उठो देश के सभी साथियो ! बात नहीं, अब काम करो

अभी अभी तो देखा तुमने, जल्वा माँ के वीर का
धुँआधार उस कर्मरती का, धीर और गम्भीर का
जिसको नहीं नींद आती, बिन तप और निष्ठा काम के
सदा जुटा वह रहा काम पर, बिना लिये विश्राम के
उसके आदर्शों की पूजा, सभी सुबह और शाम करो

अब आराम हराम हमें है, उसकी वाणी गूँजती
सभी समस्याओं से उलझी, उसकी काया जूझती
न्यायमूर्ति, करुणार्द्र हृदय का, ऐसा था वह सारथी
शोषण भूख गरीबी से जो लड़ता रहा उदार-व्रती
उन सब सपनों को पूरा कर, उसका यश उद्दाम करो

अगर न होती बागडोर, सत्ता की उसके हाथों में
उसके सत् से रहा चमकता, चाँद अँधेरी रातों में
स्वतन्त्रता था सिद्धि लिये, जो दुःखों मे मुस्काता था
लिए नयी तस्वीर देश की क़दम क़दम हर्षाता था
उसका प्रण पालन कर, उसका नाम और अभिराम करो

उठो सूर्य की पहली पहली किरण यहाँ अँगड़ाती है
आँचल की छाया देकर, भारत माँ तुम्हें बुलाती है
अरे पहरुओ ! रक्षा करना, उसके अमर-सुहाग की
वक्त आ गया मुँह न मोड़ना, यह बाजी है आग की
आजादी की उम्र बढ़े, बातों पर एक विराम करो



आराम है हराम

जिसके प्रजातन्त्र का सारे जग में फैला नाम
सुनी नहीं क्या तुमने उसकी वाणी यह निष्काम
—आराम है हराम

आँधी हो या तूफ़ानों में बिजली या बरसात
जिसने कभी न रुकना सीखा, दिन हो चाहे रात
बाँट गया वह नेता सब को, अपना अपना काम
—आराम है हराम

कर्म और निष्ठा का जो था, चलता फिरता रूप
उसके पथ में शीतल छाया, या हो जलती धूप
विद्युत् गति से डटा रहा, वह बिना लिये विश्राम
—आराम है हराम

मुस्कानों से रहा बाँटता, वह जो मोहन-मन्त्र
आलस से आजादी जाती, हो जाते परतंत्र
माथा झुका तिरंगे को, जो करता रहा सलाम
—आराम है हराम

आत्म-भाव, सेवा से जिसने, जग को दिया संदेश
छोड़ो क्रोध, ईर्ष्या से, सब हो जाते हैं शेष
कभी न हारा विजय किया, यह स्वतन्त्रता संग्राम
—आराम है हराम

सूत्र वाक्य थे ये नेता के—'हिम्मत कभी न हार
कायरता ग्रौर ग्रकर्मण्यता, मत दो इन्हें दुलार'
जिसने माँ का दूध कभी भी, नही किया बदनाम
—आराम है हराम

ग्रमर हो गई अरे जवाहर ! सदियों तेरी बात
तेरा कार्य जीत लाया, अँधियारे में भी प्राप्त
गूँज रही है वाणी तेरी, भारत में अविराम
—ग्राराम है हराम

कर्मठ बन जुट जाओ सारे, चमके भारत भाल
उठो सँभालो माँ के बेटो ! जलती हुई मशाल
कालजयी बन गया जवाहर, बुद्ध हुआ या राम
—ग्राराम है हराम



कश्मीर हमारा है

केसर की बगिया पर तुम नजर लगाना मत,
यह भारत माँ का दिव्यभाल, कश्मीर हमारा है

अपना था वतन तुम्ही ने तो, खडित कर टुकडे करवाए
हिलमिल कर साथ बैठने के, सब सपने तुमने झुठलाए
हम सभी एक माँ के बेटे, पर तुमने बेगाना समझा
हमने सबको पहिचाना था, पर तुमने अनजाना समझा

हम खड़े देखते रहे, तुम्ही ने छल डाला,
तुमने बापू से किया यही दिल का बँटवारा है

यह झेलम का जल हमको, गगाजल से प्यारा लगता है
यह बर्फीला शीशम-यौवन, जो शिखर शिखर से बहता है
यह सतलज, रावी, व्यास, सिन्धु का, उद्गम अपना आँगन है
धड से सिर भी क्या अलग हुआ, यह सबकी पूजा का धन है

इसके सिर पर तो शेष-नाग की है छाया,
अन्तस् मे बहती वीर शहीदों की जलधारा है

जब राष्ट्र-पिता ने तुमको अपने, प्राणो से बड प्यार किया
जब न्याय-नीति से उसने तुमको, अपना सब अधिकार दिया
तुम ही बतला दो नेहरू ने, तुम पर ग्रर जुल्म किया कोई
वह स्नेह बाँटता रहा तुम्हें, सारी दिल की कालिख धोई

यह अनधिकार फिर भी तुम माँग उठाते हो,
लो प्रश्न पूछती यह तुमसे झेलम की धारा है

तुम व्यर्थ हमारी दौलत को अपना कहने को आकुल हो
तुम राष्ट्रसघ तक दौड़ दौड़ कर, जाने क्यों व्याकुल हो ?
जो अंग हमारा जिस्मानी, उसको हम अलग कहें कैसे ?
माँ की इज्जत पर आँच धरे, उसको हम कहो सहें कैसे ?

मत आधी छोड़ एक को पाने को मचलो,
जो मिला उसे समझो अपनी, आँखों का तारा है

हम शान्तिदूत नेहरू के आदर्शों पर मिटने वाले हैं
हम जियो और जीने दो से, भारत का भाग्य सँभाले हैं
हम अब भी मित्र समझते हैं, तुम भारत के प्रतिवेशी हो
हम शपथ सत्य की लेते हैं, आजादी के उन्मेषी हो

हम अब भी हिंसा के दानव के हैं दुश्मन,
हमने इस शान्ति अहिंसा पर, तन-मन-धन वारा है

था जिसका वंश वहीं का, उससे तुम कश्मीर माँगते थे
जो रँगी शहीदों के प्रण से उसकी तस्वीर माँगते थे
इतिहास जानता है इसको, हमने सम्मान नहीं बेचा
हम मिटे देश की पूजा पर, हमने अभिमान नहीं बेचा

यह एक जवाहर कोटि कोटि में बदल गया,
उसको मिट्टी ने बाँहों में भर लिया दुलारा है

तुम एक ओर उस राष्ट्र-संघ से, बात सुलह की करते हो
'कश्मीर हमारा' कह करके, जाने कैसा दम भरते हो?
शायद तुमको यह ज्ञात नहीं, सीमा के प्रहरी जाग रहे
तुम दोस्त बने, मित्रों पर भी, हर रोज गोलियाँ दाग रहे

तुम जाग रहे पर आँख मूँद कर सोते हो,
यह चाल दुरंगी हमको नहीं गवारा है

जो पहली किरण सूर्य की शहनाई सुन आँखे खोल रहा
'मैं भारत का भारत मेरा', दृढ़ता के स्वर में बोल रहा
तुम खूनी हाथ उठाते हो, अब भी हिंसा पर तुले हुए
उसके गुलाब यौवन के हैं, उनके सब पाटल खुले हुए

दुनियाँ के शायर न्यौछावर, उस रूमानी बनजारे पर,
हर कालिदास ने उसको गीतों से शृंगारा है

उसकी मिट्टी की शाख शाख, भारत के यश से झूम रही
उसकी घाटी की, शिखरों की, आवाज देश को चूम रही
जिसका अभिषेक करे सूरज, चंदा की किरण सुलाती है
चरवाहे बादल अँगड़ाते, स्वर्णिल सध्या मुस्काती है
जो स्वाभिमान पर विना आग जल जाता है,
उसके फ़ौलादी इन्साँ, वह प्रज्वलित अंगारा है

जब नहीं सुनी तुमने उसकी, घाटी की मेघ-मल्हारों को
बिजली सी बल खाती झीलें, दल-बादल की बौछारों को
उसमें केसर के फूल झरे, कमलों में मोती का पानी
उसके सब सोते अमृत के, उसका यौवन है बर्फ़ानी
वह आग लिए सीने मे जलियाँ-वाला की,
थोड़ा रावी का उससे दूर किनारा है

यह आँखों का अनुराग, हमारे प्राणो का श्वेताम्बर है
यह ऋतुओं का पचांग, हमारे नयनों का विद्याधर है
इसके कण-कण में इन्द्रजाल, इसमे खुशबू है केसर की
जीवन-निर्झर दर्पण जैसे, इसमें आभा है अम्बर की
यह भरे प्रीत सीने में युग की समता की,
इसका उद्घोष समय के प्रण का नारा है

यह 'शालिमार' उद्यान, हमारी सुन्दरता का शबनम है
ये चंचल 'चार चिनार' और 'शाही चश्मा' किससे कम है ?
उस चित्रकार ने रंगों का वैभव 'डल' में भर दिया सभी
यह वर्फानी-सिंगार आईने, विस्मृत होते कहीं कभी ?
यह 'पहलगाँव', गुलमर्ग स्वर्ग के रूपक है
यह काव्य-कला का रूमानी बंजारा है

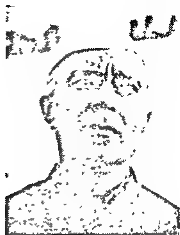
जन्मी थी इसी धरा पर अपनी राजतरंगिणि कल्हण की
आकर्षण कालिदास के थे, यह धरा मेघदूती-धन की
इसको दिव्या ने महकाए, सारे भारत के भवन-अजिर
इसमें आहृत थे आद्य-शंकराचार्य, हमारे मन-मन्दिर

वह अखिल विश्व का राशि-राशि सौन्दर्य लिए,
गीतों में भरता शब्द-रूप का पारा है

हम एक बार फिर कहते है, यह माँ का भाल हमारा है
तुम हिंसा में विश्वास लिये, कैसा यह दंभ तुम्हारा है
हम सुई बराबर धरती भी, तुमको कैसे लेने देंगे
महाभारत जिसके लिये हुआ, उस नौका को लेने देंगे ?

यह बात आखिरी बार तुम्हें हम भेज रहे,
सपना छोडो, क्यों ज्वालामुखी उभारा है ?





हमारे संकल्प

सपनों को साकार करो

जन नायक जन नेता के, सब सपनों को साकार करो

देखो उसकी आन न टूटे
सावधान हो जाँय सभी
तटस्थता की नीति उसी को
हम उसमें खो जायें सभी
कभी न टूटे तार स्नेह का, प्रजातन्त्र से प्यार करो

शोषित मानव के दर्दों से
उसका दिल भर आता था
दीन-वर्ग की कृश-काया को
देख देख दुख पाता था
कोई दुखी न सोये साथी ! धन धानों से देश भरो

पंच वर्ष की नई योजना
बनी स्थापना नेहरू की
जाल बिछें नहरों के,
सागर बँधें, कामना नेहरू की
शस्य-श्यामला धरती का फिर, स्वर्ण-मेखला नाम धरो

ग्राम-राज्य को लेकर आये
वे गाँवों के साथ थे
सबसे मिल मजबूत किए
नेता ने अपने हाथ थे
देख रही है उनकी आँखें, श्रद्धा से सत्कार करो

पंचशील की बौछारों को
भारत करता याद है
पतझड़ में भी मुस्काया
उसका मधुमासी चांद है

स्नेह एकता के, उसके चरणों में अब अम्बार करो

भारत के ही नहीं, विश्व के
बालक उसको प्यारे थे
सबने चाचा-नेहरू कहकर
हीरे मोती वारे थे

शिशुओं का उज्ज्वल भविष्य हो, सब उनको तैयार करो

फ़सलें पैदा हों गाँवों से
दीवाने रणवीरों की
कथा सुनायें माताएँ
सब देश प्रेम प्रणवीरों की

वीरो के आदर्शों का सब, अम्बर तक गुंजार करो

कला और विज्ञान हमारे
दुनियाँ के सरताज हों
पुरखों से जो मिली वसीयत
सबको उस पर नाज हो

गीता रामायण से तुम, आजादी का शृंगार करो

एक एक मिल जाने से ही
संघशक्ति बन जाती है
एक बीज लाखों में बदले
मिट्टी जब मुस्काती है

धरती माँ के दामन का, उत्पादन से अभिसार करो

ओ ईमान छोड़ने वालो !
मानवता से प्यार करो
मत विनाश की करो बात
सत् से शिव में अनुराग भरो
"मानव-धर्म" सभी का, आओ आशा का संचार करो

धूमिल कभी न होने पावें
प्यारे नेहरू के सपने
विश्व-प्रेम के दीप जलें सब
बन जावें भाई अपने
करके दृढ़ संकल्प, जवाहर की फिर से जयकार करो
जन-नायक जन-नेता के उन सपनों को साकार करो !



जवाहर उगाओ

जवाहर उगाओ, जवाहर उगाओ, किसानो ! धरा में जवाहर उगाओ

अभी तो ढला है, यह धरती का सूरज
वह चांदी के शिखरों पै सोने गया है
अभी चाँदनी ने कहा है गगन से
वह आँसू से शबनम को धोने गया है
वही मेघ बनकर लो बरसा दे मोती, करोड़ो स्वरों से उसे तुम बुलाओ

उसी का कथन था—"मै खेतों में बिखरूँ
नये रूप देखूँ, नये जन्म लेकर
उसी का वचन था, वतन के लिये तुम
सभी टूट जाना, भले जान देकर"
यह सपने उसी के कहीं ढह न जायें, यह संकल्प का प्रण सभी गुनगुनाओ

तुम्हें याद तुमने उगाया है ईसा
यह सिद्धार्थ भी तो तुम्हारी उपज है
वही राम औ' कृष्ण, नानक, शिवाजी
यह गाँधी, तिलक, लाजपत की ही रज है
यह धरती के बेटे सभी कह रहे है, कि मुस्कान माटी में अब तुम खिलाओ

दयानन्द, नेता औ' नल्वा की यादें
तुम्ही ने इन्हें खून दे दे के सींचा
ये सिरजे भगतसिंह, आजाद तुमने
कही अब न होये वही शीश नीचा
ये आपात्ति वाली घटाएँ चढ़ी है, उठो रे जवानो ! उठो गीत गाओ

जोम चीर हल से तुम्ही जीत लाए
वह मिथिला की ममता, जगन्मात सीता
यह चित्तौड़ तुमने उगाया बढ़ाया
उठो कर्मवीरो ! यह कहती है गीता

बहिन पद्मिनी और झाँसी की रानी, तुम्हारी फ़सल थी, उन्हे अब जगाओ

वह मेधा का स्वामी, वह जन जन का नेता
प्रजा का दुलारा वह नेता हमारा
उसी की बदौलत हुए हम हिमालय
नहीं एक भारत का, दुनियाँ का प्यारा

कहीं वह यहीं खेत में सो गया है, क्या देखा था तुमने, बताओ बताओ ?

वह हस्ती मिटाके बना भर्तबा जो
चमन की हवाओं में वह खो गया है
वह बोया गया देश के अचलों में
वह मिट्टी का बेटा अमर हो गया है

उठो लहलहाओ फ़सल आ गई है, हजारों औ लाखों जवाहर कमाओ

दिवाली दशहरा मनायेंगे हम सब
छुआछूत यह भेद बिलकुल न होगा
तभी हो सकेगी, यह रोली यह होली
वह नेहरू-चिरागे-वतन गुल न होगा

मेरे दोस्तो ! अब समय आ गया है, लो कंधों पे अपने वतन को उठाओ

खड़ी पास में दुश्मनी देख लो तुम
अभी मित्रता में दगा दिख रहा है
अभी तो छिड़ी जंग सीमा की हम पै
यह इतिहास उनकी कथा लिख रहा है
खड़ी खोल मुँह को समस्याएँ अपनी, सभी शूल राहों के आकर हटाओ

यह कश्मीर देखो, यह अपना वतन है
ये केसर की कलियाँ महक मुस्कराती
पड़ोसी की उस पर नजर उठ रही है
हमारी वह दौलत, हमारी वह थाती
हमारे चमन का सलोना सपन वह, अमन के सभी शासकों को सुनाओ

वह भारत के कण कण में अब भी मुखर है
अरे पासवाँ गुलसिताँ वह हमारा
वह आँगन का बेटा, वह बगिया का माली
वह कुर्बानियों का अकेला सितारा
सँभालो किसानो! वह खेतों का श्रम है, उठो, अर्घ्य चरणों में उसके चढ़ाओ



तीन-मूर्ति की ज्योति

तीन-मूर्ति की ज्योति ! तुम्हारा सदियों तक जय गान हो

जहाँ तुम्हारा रैन-बसेरा
तीर्थ बन गया है वह घर
आज़ादी का दीप जलेगा
जहाँ सत्य और शिव बनकर
स्वतन्त्रता के प्रहरी ! तेरा अमर यहाँ बलिदान हो

एक एक क्षण तेरे मन का
भारत का निर्माण है
एक एक कण तेरे तन का
पूजा का अरमान है
मानवता के मूर्त-पुजारी ! अक्षय यह सम्मान हो

तुम ऐसे योद्धा थे, जिसको
नहीं शस्त्र से प्यार था
हथियारों के बिना तुम्ही ने
विजय किया अधिकार था
हिंसा तुमसे दूर भागती, सबको इसका भान हो

सबके तुम सिरमौर हुए
हे राजनीति के पारखी !
पारस-परस तुम्हारा, तुमको
क्या चिंता थी हार की
प्यार-प्रेरणा, मुक्त-चेतना, तेरे यश की आन हो

अक्षय-वट सी छाया तेरी
पाकर के सब प्रीत थे,
सबसे अलग तुम्हारा चिन्तन,
वरदानों के गीत थे
सघर्षों मे जिए सदा, घर घर तेरी पहिचान हो

शत्रु-अजात रहे तुम सबके
कृत सकल्पी ! सारथी
जन जन का मन-मन्दिर करता
तेरी पूजा आरती
ओ माँ के सच्चे सपूत ! सबको तुम पर अभिमान हो

प्रजातत्र को तुमने ही दी
सेवा कर ये आशाएँ
मधुर बोल, मानव-धर्मी थीं
तेरे प्रण की भाषाएँ
चाह तुम्हारी थी सबके सँग, अपना भी कल्याण हो



चाचा नेहरू ज़िन्दाबाद

अम्बर तक गूँजे यह नाद 'चाचा नेहरू जिन्दाबाद'

मेरे बाल सैनिकों आओ
शरणों मे अब शीश झुकाओ
सब मिलकर आवाज लगाओ
—चाचा नेहरू जिन्दाबाद

हिल जाये सागर का पानी
तूफ़ानी हो जाय जवानी
हुई तुम्हारी अमर कहानी
—चाचा नेहरू ज़िन्दाबाद

स्वतन्त्रता प्राणों से तौलें
सदा चलें हम आँखें खोलें
मिलकर सभी एक हो बोलें
—चाचा नेहरू जिन्दाबाद

सागर सरिता मेघ दुलारें
श्रद्धा से हम तुम्हे पुकारें
तूफ़ानों सी जय जयकारें
—चाचा नेहरू ज़िन्दाबाद

चरण-चिह्न जिनके ममता के
जिनके वचन प्यार-समता के
करुण-गीत थे पावनता के
—चाचा नेहरू ज़िन्दाबाद

आजादी की आग लगाकर
देश प्रेम का राग लगाकर
जो सोये थे उन्हे जगाकर
—चाचा नेहरू जिन्दाबाद

सबका दर्द समझने वाले
सुख शैय्या को तजने वाले
सिंह-सपूत गरजने वाले
—चाचा नेहरू जिन्दाबाद

किरणों से भर भरकर थाल
अक्षत कुकुम तेरे भाल
माँ के अमर जवाहर लाल
—चाचा नेहरू जिन्दाबाद

तुम्हें प्रणाम करोड़ों लाये
तुम पर मिटे और मर जायें
कोटि कोटि स्वर मिलकर गाये
—चाचा नेहरू जिन्दाबाद



भवन अधूरा खड़ा हुआ

ओ शिल्पी ! तेरा भवन अधूरा खड़ा हुआ

यह धूप चिलचिलाती तपती दोपहरी की
यह सन्नाटा, यह तपिश और यह तन्हायी
यह स्वप्न अधूरे, यह रूखापन मौसम का
जैसे हो आशा की लतिकाएँ मुर्झायी

यह तेरा पन्ना खुला अधूरा पड़ा हुआ

यह आवाजें फबतियाँ आ रही हैं हम पर
यह कूचे गलियाँ, दर्द घुटन की गंध भरी
यह खाँसी, बीमारी, बिस्तर सामान नहीं
यह भूख, ग़रीबी सर्द-आह बन कर बिखरी

सबके दिल में यह काँटा अब भी गड़ा हुआ

यह घूस, अनैतिकता, दलबंदी, मँहगाई
यह खेती और किसानी जैसे रूठ गई
यह भेद, विषमता और अमीरी के जल्वे
यह अस्मत के कोठे, दूकानें नई नई

यह दैत्य हमारे पथ में अब भी अड़ा हुआ

तू रहा जूझता इनसे हो दृढ़-संकल्पी
कुछ को तोड़ा जड़ से, कुछ अब भी बाकी हैं
जो कुछ भी तूने ढाला पक्के साँचे में,
इतिहास दे रहा आज उसी की साखी है

तेरा बिरवा अब वट बन करके बड़ा हुआ

शायद सब तेरे सपनों से ही प्रेरित हो
जितने भी काम अधूरे, पूरा कर डालें
सम्भव तेरे आदर्शों से इन्दिरा वहिन
भारत विराट करने की कुछ क़समें खालें

कण कण मे तेरा नाम जवाहर जुड़ा हुआ



मित्र राष्ट्रों के नाम

ओ भारत के मित्रो ! तुमको, मैं भेज रहा हूँ यह पाती

वह तार रेशमी-बंधन है, जो उसने तुमसे जोड़ा था
समरसता, प्यार, लिये वल्गा, पूरे ही जग को मोड़ा था
वह विश्वबंधु था प्राणों से, दिल से दिमाग़ से लासानी
उसमें जिस्मानी दौलत थी, उसकी ताक़त थी रूहानी

उसकी हर बात सुलह की थी, उसकी मुस्कानें जज्बाती

ओ रूस, मिश्र, इंग्लैंड ! सुनो, उसने जो तुमको प्यार दिया
अमरीका, योरुप, दुनियाँ को, था शान्ति, स्नेह-आधार दिया
वह राष्ट्र-संघ का साथी था, दुश्मन था, युद्ध विनाशों का
धरती माता का बेटा था, सरगम था सबकी साँसों का

उसकी सुधियों का संगम है, यह पंचशील जैसी थाती

ओ चीन ! तुम्हें भी स्नेह दिया, पर तुमने बात नहीं मानी
यह विश्व गवाही देता है, ममता की मूरत का पानी
तुम ही बोलो उन युद्धों से, अपनी कोई भी बात बनी
हिंसा तो आखिर हिंसा है, मैत्री की मंजिल थी अपनी

यान्टुंग की बातें अब भी तो, अपने मानस पर उतराती

तू रहा जूझता इनसे हो दृढ़-संकल्पी
कुछ को तोड़ा जड़ से, कुछ अब भी बाकी है
जो कुछ भी तूने ढाला पक्के साँचे में,
इतिहास दे रहा आज उसी की साखी है

तेरा बिरवा अब वट बन करके बड़ा हुआ

शायद सब तेरे सपनों से ही प्रेरित हो
जितने भी काम अधूरे, पूरा कर डालें
सम्भव तेरे आदर्शों से इन्दिरा बहिन
भारत विराट करने की कुछ क़समें खालें

कण कण में तेरा नाम जवाहर जुड़ा हुआ



मित्र राष्ट्रों के नाम

ओ भारत के मित्रो ! तुमको, मैं भेज रहा हूँ यह पाती

वह तार रेशमी-बंधन है, जो उसने तुमसे जोड़ा था
समरसता, प्यार, लिये वल्गा, पूरे ही जग को मोड़ा था
वह विश्वबंधु था प्राणों से, दिल से दिमाग से लासानी
उसमें जिस्मानी दौलत थी, उसकी ताकत थी रूहानी

उसकी हर बात सुलह की थी, उसकी मुस्कानें जज्बाती

ओ रूस, मित्र, इंग्लैंड ! सुनो, उसने जो तुमको प्यार दिया
अमरीका, योरुप, दुनियाँ को, था शान्ति, स्नेह-आधार दिया
वह राष्ट्र-संघ का साथी था, दुश्मन था, युद्ध विनाशों का
धरती माता का बेटा था, सरगम था सबकी साँसों का

उसकी सुधियों का संगम है, यह पंचशील जैसी थाती

ओ चीन ! तुम्हें भी स्नेह दिया, पर तुमने बात नहीं मानी
यह विश्व गवाही देता है, ममता की मूरत का पानी
तुम ही बोलो उन युद्धो से, अपनी कोई भी बात बनी
हिंसा तो आखिर हिंसा है, मैत्री की मंज़िल थी अपनी

बान्दुंग की बातें अब भी तो, अपने मानस पर उतरातीं

वह "जियो और जीने दो" का, पैगाम सुनाया करता था
उसको हिंसा से नफ़रत थी, वह सबको भाया करता था
उसका हर हाथ दोस्ती का, उसका हर क़दम जवान रहा
करुणा, ममता, समता बाँटी, सारे जग का महमान रहा

वह सत्य, अहिंसा-अनुगामी, यह बात विश्व में अँगड़ाती

वह नहीं रहा, पर भारत में उसका हर सपना जिन्दा है
उसके हाथों मानवता की, हर एक कल्पना जिन्दा है
उसकी कामना यही तो थी, सारा जग उसका हो जाये
अणु की शक्तियाँ शिव बनकर, सब विश्व प्रेम में खो जाये

उसके आदर्शों की दिव्या, सौरभ सी जग में इठलाती

अविकसित राष्ट्रों को लेकर, उसने सपना निर्माण किया
निरपेक्ष शान्ति-प्रिय देश लिये, फिर शिखर-संघ को जन्म दिया
वह बिरवा अब वट वृक्ष बना, उसकी जय जय के गीतों से
वह आन्दोलन अब गूँज रहा, उसके अनुगामी मीतों से

ओ राष्ट्रसंघ ! देखो न बुझे, उसके आदर्शों की बाती



जी भर के भी देख न पाए

सबके दर्दो को अपना कर जीने वाले !
हम तो तुमको जी भर के भी देख न पाये

कुछ ऐसी वह बूंद समन्दर बनकर फैली
एक शब्द का नाद, शून्य बन गया हमारा
एक कड़ी बँध गई करोड़ो के सपनो से
एक बोल बन गया सभी का प्यार सहारा
तरस गई पाने को पावन परस तुम्हारा,
यह दुखियारी आंखें तक हम सेक न पाये

दृष्टि जिधर उठ गई, उधर पद-चिह्न तुम्हारे
मरुथल में तूफानों मे अक्षुण्ण रहे तुम
सुना जहां, बस वही तुम्हारी वाणी गूँजी
मानवता के जैसे जीवित-पुण्य रहे तुम
सबकी उम्र बढाने में खुद शेष हो गए,
अर्पित करने गये, स्वय अर्पण हो आये

तुम्हें देखने का वह राशि राशि सुख-सपना
मेरे भारत का जैसे इतिहास हो गया
कुछ बेमोसम चढ़ी घटाएँ काली काली
धूमिल होकर इस धरती का चाँद सो गया
युग का पटाक्षेप कर डाला आँख मूँदकर,
शेष बचे हैं, अब केवल स्मृतियों के साये

और आज तुम चले गये, रोया सिंहासन
पास हमारे अब श्रद्धा और प्रीत रह गए
तुम बिना सूना सूना लगता सारा भारत,
तुम्हे सुनाने वाले कुछ संगीत रह गए
धरती की क्या कहूँ, दहल कर अम्बर ने भी,
तेरी पूजा मे आँखों के फूल चढाये

उसका स्मारक

तब बनवाना उसका स्मारक, तब बनवाना उसका स्मारक

जब युद्ध मुक्त हो विश्व सभी
मानव का शोषण हो न कभी
जब पंचशील का पालन हो
शिशुओं का सुन्दर लालन हो
हर ओर ज़िन्दगी मुस्काए
ममता करुणा से हर्षाए
सद्भावी समता वाले हों
जब नही घरो में ताले हो—तब बनवाना उसका स्मारक

जब लोकतंत्र की उम्र बढ़े
उन्नति के शिखरों देश चढ़े
कर्तव्य-परायणता जागे
सब आलस, हीन-भाव त्यागे
जब अणु सबका कल्याण करे
धन-धानों से यह देश भरे
जब ग्राम राज्य को पाएँ हम
घर घर में अलख जगाएँ हम—तब बनवाना उसका स्मारक

घर घर सेवा का व्रत ठाने
मानव को मानव पहिचाने
सारी दुनियाँ अधिकार जिए
सबकी पलकों में प्यार जिए
निष्ठा औ' त्याग हमारे हों
आँगन अनुराग हमारे हों
कोई न यहाँ भूखा सोए
तन मन से हों दूधों धोए—तब बनवाना उसका स्मारक

हर तार तार को जोड़ चलें
हिंसा से हम मुँह मोड़ चलें
आज़ादी की कीमत जानें
हों खरी हमारी पहिचानें
यह भूख गरीबी मँहगाई
नल्खी जो हम पै घिर आई
यह जाति भेद की काराएँ
सूखे पीड़ा की धाराएँ—तब बनवाना उसका स्मारक

जब शान्ति अहिंसा का पथ हो
जन जन की वाणी में सत हो
कोई न रहे दुश्मन अपना
जब पूरा हो उसका सपना
मोती की माला बन जाये
कल्याण-कामना सरसाये
संयम ग्रौर शील हमारा हो
भारत आँखों का तारा हो—तब बनवाना उसका स्मारक

जो कार्य अधूरे पड़े हुए
बन कर सवाल जो खड़े हुए
कश्मीर बुलाता है हमको
लद्दाख लुभाता है हमको
जो नई योजनाएँ ग्राई
जो थी नेहरू ने बनवाई
इनको जब पूरा कर दोगे
धरती को यह अम्बर दोगे—तब बनवाना उसका स्मारक

जो माँ का सच्चा साधक था
मानवता का आराधक था
प्रण उसका अपना मानोगे
जब तुम उसको पहिचानोगे
सेवा से प्यार कमाने में
उसकी हर बात जमाने में
जब माँ की रक्षा कर लोगे
उसके चरणों में सर दोगे—तब बनवाना उसका स्मारक

वह सुर्ख़ गुलाव चमन का था
प्राणों का ख़्वाव वतन का था
जव उसका मोल चुका लोगे
आँसू जब सभी सुखा लोगे
वह स्वय एक इतिहास रहा
फूलो का मौसम-हास रहा
जव उसकी सुधियाँ आँखों मे
भर लोगे गति को पाँखों मे—तव वनवाना उसका स्मारक

वह हर पनघट पर जाता था
सवको आवाज लगाता था
हर चौराहे जो खडा हुआ
सवके आँगन मे वडा हुआ
उसको प्राणों का धन देकर
उसकी रक्षा का प्रण लेकर
जव उसको पूजा तुम दोगे
जव उसको साँसों मे लोगे—तव वनवाना उसका स्मारक

वह भारत के कण कण मे है
वह दुनियाँ के जन जन में है
सीमा से उसको मत बाँधो
पहिले अपने को तो साधो
जव उसको सव में देख सको
शव्दों मे उसको रेख सको
जव उसकी यह तस्वीर वने
जव पूरे हो अपने सपने—तव वनवाना उसका स्मारक



तुमको विश्वास दिलाते हैं

ओ भारत के स्रष्टा ! निर्भीक ! महामानव !
हम कोटि कोटि तुमको विश्वास दिलाते है

जिन संकेतों पर चल तुमने, सबका भविष्य शृ गारा है
जिन रेखाओं मे रँग भरकर, जीवन का रूप उभारा है
उन सबको हमने प्राणों के, अन्तस् मे भर अनुराग दिया
तुमने जितने भी शब्द दिए, मजिल कहकर स्वीकार लिया
ओ महाप्राण ! सबके भविष्य के द्रष्टा तुम !
उन पद-चिह्नो से अपने क़दम मिलाते है

तुमने सघर्षो मे जीकर भारत का नव निर्माण किया
तुमने जागृति के दीपों से, ज्योतिर्मय जीवन प्राण किया
जो कार्य उठाये थे तुमने, उनकी तस्वीर निराली है
दर्दों की अँधियारी गलियाँ, सब तुमने देखी भाली है
तुम काया-कल्प लिए, उतरे इस धरती पर
उन संकल्पो पर हम सब बढ़ते जाते है

जितने भी कार्य अधूरे तुमसे, छूट गए वे याद हमें
दैविक-आकर्षण, सेवा से, कर गए वतन आजाद हमें
हम श्रद्धा से अवनत होकर, तुमको करते है प्यार सभी
अर्पित करते है आँसू के, फूलों के, प्रण के ज्वार सभी
ओ मेधा के साधक ! भारत के देव पुरुष !
उन सपनों को अपना सधान बनाते हैं

जो चरण बढाए थे तुमने, विश्वास हो गए हम सबके
जो सागर मरु को दान दिए, वे साँस हो गये हम सबके
हम कोटि कोटि भारतवासी, सब मिलकर शपथ ले रहे हैं
तुम नही रहे पर हम तुमको, हर क्षण आवाज दे रहे है
ओ प्रज्ञा से धनवान ! प्रभा से ज्योतिर्मय !
हम स्वतन्त्रता का घर घर अलख जगाते है



सोने की स्याही से

वाणी की कलम चल पडी है, भावों के ज्वार उभर आये
सोने की स्याही से केवल ! तेरा इतिहास लिखा जाये

अँधियारी राहों मे चलकर, तुमने ज्योतिर्मय छंद किए
मैत्री का हाथ बढ़ाकर के, सारे जग से सम्बन्ध किए
पगडंडी को तुमने बदला, वह आज राज-पथ कहलाती
तेरी सुधियाँ बन लोकगीत, सबकी साँसों को सहलाती
अमरत्व तुम्हारी कुर्बानी, अब मंज़िल बनकर अँगड़ाए

जब पहली बार किया तूने, तूफ़ानी दौरा गाँवों का
कृषकों का दर्द सुना तूने, शोषण और नंगे पाँवों का
करुणा से हिया हिला तेरा, वैभव छोड़े, सुख को त्यागा
अर्पित तन, मन, धन किए सभी, बापू से तूने पथ माँगा
सबकी पूजा में मिट कर ही, यह मानव-धर्म बना पाए

सत्ता को एक चुनौती दी, कितने आन्दोलन कर डाले
खादी के धागों में बाँधे, सबके मन प्रण से भर डाले
हर घर आँगन, हर द्वार द्वार, तूने आवाज लगाई थी
रावी तट से ललकार लिए, वह सिंह-गर्जना आई थी
अँग्रेजी प्रभुता काँप उठी तूने, कैसे शर बरसाए

हर तार तार को जोड़ जोड़ आजादी को मजबूत किया
जेलें काटीं, सगठन किए, किस देश-भक्ति का नशा पिया
अँधियारी रातें, जलते दिन, आँधी पानी बरसातें हों
भीषण ऊष्मा आतप चाहे, झंझा को भारी घातें हों
तू बढ़ता रहा मुस्कराता, जैसे तूफ़ान बढ़ा आए

शोषक को देख जवाहर की आँखों की नींद हराम हुई
वह दर्द जिन्दगी भर पाया, यह सुबह हुई या शाम हुई
यह बयालीस की क्रान्ति, और भारत छोड़ो का आन्दोलन
हर जगह अमर आलोक लिये, क्या हो अब तेरा सम्बोधन ?
यह गिरा अनयन हुई सबकी, नयनों के कोरक भर आए

लेकर स्वतन्त्रता तूने, डोर सँभाली अपने भारत की
शासन के सत्रह वर्ष जिए, पाकर मुस्कानें बहुमत की
लेकर मशाल तू बढ़ा, अहिंसा को दुनियाँ में अमर किया
पूजा पाई सारे जग मे, बस शांति प्यार से समर किया
सबने तुम से राहें पाईं, आकाश हुए, सब पर छाए

बीसवी सदी के अम्बर में, तेरा जीवन जगमग करता
यह महाकाव्य आजादी का, अमृत को प्राणों में भरता
आचन्द्रतारकं तू जिन्दा, यह गीतांजली जहाँ होगी
यह सत्यं शिवं सुन्दरम् सी, सरगम की शान्ति वहाँ होगी
तूने विराट बन कर जीवन के, अर्थ सभी को समझाए

तूने ही तो अहसास किया, निरपेक्ष-गुटों के मंगल का
अविकसित जितने राष्ट्र रहे, उनके दर्दों के अंचल का
सुख डूबा मानव सोच कहाँ पाता निरीह के प्रश्नों को,
आकाश कहाँ चिन्तन करता, धरती के उजड़े जश्नों को ?
तीसरे विश्व का पिता बना, उनके सपने भी सरसाये

हर एक आँख नम-पुरनम हो, दीनों को ऊँचा लाने को
उनकी पीड़ाएँ काव्य बनें, उनका सब कर्ज़ चुकाने को
हरिजन, अनुसूचित वर्गों पर, तेरी आँखें भर आती थी
बापू सी करुणा जाने क्यों, तेरे मन पर उतराती थी
वह अब तक अक्षर बनी हुई, हर देहरी तेरा यश गाए

तूने ही नीव धरी थी, अपनी क़ौम-क़ौम एकत्व जियें
सब स्वार्थ छोडकर गले मिलें, भाई-चारे का नशा पियें
सबको सूरज की किरणों का, बिन भेद भाव पीयूष मिले
सबके ग्राँगन मे ममता का, हर ताल-ताल जलजात खिले
इस सपने को पाला तुमने, तो जन-जन-नायक कहलाए

जब-जब चिन्तन जड हुआ यहाँ, तूने चेतनता गहराई
पतझड को कोमल किसलय दे, वासन्ती आशा लहराई
तेरी वाणी जब भी गूँजी, वह लोह-लेख सी अमिट बनी
तेरी मुस्काने पहिचानी, तेरी कर्मठता हीर-कनी
वे शब्द अभी साँसों मे है, वे अर्थ अभी भी उफनाए

अर्चन आरती सँजोले, कह दो भारत की माताओं से
हर पन्ना होगा रँगा हुआ, तेरे यश की गाथाओं से
ये कीर्ति-स्तूप, ये शिलालेख, तेरे स्मारक कैसे होंगे
स्वर्णिल अक्षर हर पन्ने के, शाश्वत ये सन्देशे होंगे
ओ भारतरत्न ! अमर है तू, माटी का कण कण मुस्काए





विसर्जन

बहुजन हिताय : बहुजन सुखाय

क्या जरा मरण भय यशः काय, बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय

सेवा से ज्योतित् दिग्-दिगन्त
हे तपःपूत ! हे ज्ञानवंत !
यह मरण-पर्व तेरा वसन्त
ले राशि राशि सम्मोहन को, यह कीर्ति-किरण अब झिलमिलाय

सुख भोग त्याग वैराग लिये
सिद्धार्थ बने अमरत्व जिए
जन जन हित नव नव नेह पिए
जग-मंगल को तुम निकल पड़े, शोषक के हित वैभव विहाय

अँगुष्ठमात्र पुरुषः प्रधान
जलती वाती, ले दिव्य-ज्ञान
तुम कोटि कोटि के गेय-गान
तेरा वर्चस्व अमर करके, यह किरण ज्योति-धन मे समाय

विद्युत् सी गति, मुस्कान-दान
हे कर्मठ प्रहरी ! प्राणवान
प्रणचेता, जननेता महान
लो सार्थ हुए, निर्माण बने, तेरी निष्ठा के सब उपाय

यह मृत्यु कहाँ कैसा प्रयाण ?
तेरे यश का हो साम-गान
अद्भुत यह तेरा प्राण-दान
भूमा सा धरती का बेटा, जो सूरज बनकर जगमगाय

करुणार्द्र तपस्वी ! शांति संत !
नव भारत के स्रष्टा ज्वलंत
भौतिक देही का भले अंत
अमरत्व सार्थक बन तुम से, गूँजे गीतों में पुलक पाय



इतिहास पुरुष का मरण-पर्व

इतिहास पुरुष का मरण-पर्व, सबका तीरथ बन जाता है

शाश्वत सदियों के अधरों पर
जो अक्षर बनकर जीता है
उसका हर कर्म-पृष्ठ-स्पंदन
कहलाता, युग की गीता है
वह अमृत-पुत्र ले सोमवती-विक्रान्त-जुन्हाई आता है

घटना तिथियों और वर्षों का
वह नहीं हुआ करता ब्यौरा
उसमें आन्दोलित जीवन है
प्राणों में तूफ़ानी दौरा
पर्याय समय का बनकर उसका, शब्द शब्द अँगड़ाता है

अनुभव, उदारता, ममता के
पद-चिह्न छोड़ जाता अपने
जन के व्यापक हित से बँध कर
जीवित रहते उसके सपने
वह स्वयं खुली पुस्तक बनकर, सबके आदर्श बनाता है

उसके प्रशस्त-यश का सरगम
मृत्युंजय बन खो जाता है
भावों के उर्मिल ज्वार लिए
वह महाकाव्य हो जाता है
वह सत्य शिवं सुन्दरम् के मंगल मधु-कण बरसाता है

सो जाते कामी, काम्य सभी,
वह दिव्य जागता रहता है
आकृति हो, समय-शिला पर वह,
मर्यादा बनकर बहता है
वह पूजा का पराग बनकर, सबको अहरह महकाता है



कुर्बानी से शृंगार किया

वह एक अकेला मानव था, जिसने भारत को तन मन धन से प्यार किया

अँधियारे में, उजियाले मे, अवरोधो और तूफानों मे
वह बादल जैसा निकल पडा, आज़ादी के अभियानो मे
होकर प्रयाण का गीत चला, जैसे हो जोश जवानी का
वह घर घर का, हर आँगन का, इन्साँ था सच्चे पानी का
वह स्वयं एक आन्दोलन था, जिसने भारत को जागृति का मसार दिया

उसने हर देहरी को जोड़ा, दुनियाँ के ऊँचे सपनो से
उसने हर दुश्मन को तोड़ा, अपनी स्वतन्त्रता अपनो से
वह बापू का अन्वेषण था, रहनुमा करोड़ों लाखों का
झंझावातों में जलता था, वह दिया हमारी आँखो का
जो खून शहीदों ने सींचा, उसने वगिया को फूलों का अम्वार दिया

सबके यथार्थ को आदर्शों से, नेहरू ने आवरण दिया
उसने शहीद हो जीवन मे, सच्चे मानव का मरण जिया
संयम को तप से साधा था, योगी बनकर सम्राट् हुआ
भावों की सरगम से उसने, सारी दुनियाँ का हृदय छुआ
कुटिया महलोंके जनजन को, जिसने सदियोंतक जीनेका अधिकार दिया

उसका कहना था—"मेरे मर जाने के वाद तुम्हें आकर-
कोई पूछे, तो यों कहना, पिछला अतीत सब समझा कर
वह एक अकेला प्राणी था जिसने भारत को प्यार दिया
सच्चे दिल से, सच्चे मन से माँ को अर्चन-अभिसार दिया-"
वह मेधावी ! वह महामहिम, जिसने माँ का कुर्बानी से शृंगार किया



वह पूजा का परचम

तूफानों सा वह इन्कलाब का मौसम—लो बीत गया

सब साँसो का साथी बनकर
सब अधरों की पाती बनकर
सबकी आशाओं का संगम
जड़ता मे जिन्दादिल-जंगम
शूलों वाले फूलों का, मीठा शबनम—लो गीत गया

जो दर्दों को पीने वाला
मुस्कानों से जीने वाला
सावन के मेघों सा झूमा
माँ ने उसका माथा चूमा
वह भक्ति-गीत सा पावन, आँसू सा नम—वह मीत गया

इतिहास बदल डाला उसने
दुश्मन को दल डाला उसने
उसकी थाती पाई सबने
उसकी खेती खाई सबने
आँखों का सागर, कदम क़दम का दमखम—अब रीत गया

उसका हर क़दम हमारा था
जीवन बहती जल-धारा था
वह सुगत बना, फिर शेष हुआ
वह खुद ही भारत देश हुआ
वह प्यार विजय का और पूजा का परचम—वह जीत गया



मृत्यु गीत—

जुदाई में सारा वतन रो रहा था

गुलाबों में जैसे महक ही नहीं थी, वह फूलों से बोझिल चमन रो रहा था
अरे ओ जवाहर ! लिये याद तेरी, जुदाई में सारा वतन रो रहा था

समन्दर उठाये था हर एक आंसू
धरा को भिगोता ढला जा रहा था
जिसे देखता, वह उदासी में डूबा
लिए कारवाँ ग़म चला जा रहा था
कहर गिर पड़ा था मनों दर्द दिल पर
कि माँ का दुलारा जवाहर नहीं था
हिया फट गया आसमाँ का भी जैसे
कि भारत का प्यारा जवाहर नहीं था
सभी बुलबुलों का गला रुँध गया था, विदाई में तेरे पवन रो रहा था

गया सूख आकाश-गंगा का पानी
औ' अम्बर में सूरज का रथ रुक गया था
खड़ा जो हिमालय किए शीश ऊँचा
लगा उसका माथा बहुत झुक गया था
तिरंगे का चीवर बढ़ा फूल लेकर
चरण में तुम्हारे बिछाने चला था
अरे ओ बहादुर ! तुम्हें छीन करके
किसी ने हमें जिन्दगी से छला था
ले तूफ़ान, भूकम्प, आहों के आँसू, सितारों भरा यह गगन रो रहा था

यह दिल्ली अनाथों सी खड़ी मौन होकर
औ' जमुना की धारा का जल जम गया था
कमल रुक गई थी, कमर झुक गई थी
यह सरगम स्वरों का कहाँ थम गया था ?
उठे थे बगूले यह दर्दों के हम पर
जमी पर गमी का कहर गिर पड़ा था
सभी कह रहे थे, जवाहर नहीं अब
वतन के लिये जो हमेशा लड़ा था
तुम्हीं अब बताओ, इन्हें क्या कहूँ मैं, सभी का सलोना सपन रो रहा था

यह आवाज कैसी सुनाई पड़ी है ?
किले की दीवारों से आँसू ढले थे
यह बिलखन, यह तड़पन नहीं देख सकता
अकेले नहीं, दिल करोड़ों जले थे
ओ दिल्ली ! बताओ घड़ी आज कैसी
बहुत जुल्म तुमने युगों से सहे हैं
यह बिजली जो हम पै गिरी बेसमय में
क्या वाजिब उठे मौत के कहकहे हैं ?
यों ओलों की वर्षा बहुत सह चुके हैं, मगर आज मेघों का मन रो रहा था

अरी मृत्यु ! निर्दय न इतना विचारा
मेरा देश काली घटा से घिरा था
पड़ोसी ने उसके छुरा भोंक डाला
औ' संकट में तेरा भी सिर क्यों फिरा था
अँधेरा भले ही छले रोशनी को
या सूरज से जुगनू करे घात ऐसी
बताओ तुम्हीं क्या यह सौदा सही था
कड़कती शिशिर में यह बरसात कैसी ?
मुखर पल-रही थी, अधर जल रहे थे, मेरे हिन्द का प्राण प्रण रो रहा था

वड़ी वेरहम ! तू है सदियों से प्यासी
मेरे राम और कृष्ण तूने पचाये
मेरे बुद्ध ईसा, महावोर, मुहम्मद
ये खिल्वाड़ कैसे है तूने रचाये ?
वड़ी वेशरम ! तू, क्या थी सदियों से भूखी
जो गांधी औ' नानक को खा हंस रही थी
तू नारी है, माता है या एक नागिन ?
जो अपने ही वेटों को फिर डस रही थी
समन्दर थे शापों के, आंसू नही थे, यह सगम का सूना भवन रो रहा था

कमाया ही कितना, जो घर फूँक दे हम
अभी तो चमन को जवानी मिली थी
अभी तो रुकी थी यह दुल्हिन की डोली
औ' घूँघट मे रेशम की कलियाँ खिली थीं
मगर क्या पता था कि ऋतुराज उसका
अँगारों की चिन्गारियाँ पी चुकेंगी
वदल जायेंगे फूल शूलो में सारे
औ' कमलों पै शोलो की नजरें गिरेंगी
करोड़ों कलेजे फुँके जा रहे थे, कि भारत की माँ का वसन रो रहा था

हिया फाड धरती से निकली थी आहें
गगन ने समन्दर उड़ेले थे आँसू
समय ने सिहर कर सुई रोक दी थी
कि वच्चो की आँखों से खेले थे आँसू
उठा नाद ऊपर—"जवाहर कहाँ है"
वह चाचा हमारा हमें फिर दिला दो
वताओ, उसे क्यो लिये जा रहे हो ?
हमें लो उठालो, उसे फिर जिला दो
नही मिल सकेगा, वह नेहरू सा चाचा, यही सोच शिशुओं का मन रो रहा था

जहाँ भी खड़ा तू, अकेला खड़ा था
जलाकर मशाले वतन में अमन की
जहाँ भी बढ़ा तू, अकेला बढ़ा था
हवाएँ बदल दी थी, तूने चमन की
तेरी सान्द्र-सुन्दर, शमन शाति वाली
यह मुस्कान, दुनियाँ नही भूल सकती
तुम्हारे बिना यह सिसकता है भारत
वह पहिचान दुनियाँ नही भूल सकती
अरे ओ अहिंसक ! दिया था जो तुमने, तम्हारा वह वादा वचन रो रहा था

कि हर साल तुम जो किले पर खड़े हो
हमारे तिरंगे को फहराया करते
करोड़ों को तुम जो गले से लगाते
वे जज्बात सबके दिलों पै उभरते
पर इस बार सूना रहेगा यह मन्दिर
बिना देवता के क्या दीपक जलेगा ?
यह जन जन बहायेगा आँसू की धारा
तुम्हारे बिना कारवाँ चल सकेगा ?
करोड़ो थे तेरे इशारों पै मिटते, वह सारे जहाँ का अमन रो रहा था

उधर देखता हूँ, यह दुनियाँ दीवानी
तराजू लिए ताकतें तौलती है
खड़ा नोचता आदमी, आदमी को
यह धरती भी चुप है, नही बोलती है
सभी जागते है, मगर सो रहे हैं
हुआ जा रहा है, यह नाटक प्रलय का
अरे शांति-सैनिक ! अगर तुम न होते
महानाश होता, कपट, क्रोध, भय का
मगर बुद्ध बनकर मधुर बोध बाँटा, तुम्हारे लिये यह दमन रो रहा था

सभी राष्ट्र तुमको, थे भारत से प्यारे
अहिंसा तुम्हारा समर हो गया था
तुम्हारे लिये सब बिछाते थे पलकें
इसी से जवाहर अमर हो गया था
जो तुमने किया था, कोई क्या करेगा
यह सेवा का जन-पथ तुम्ही ने बनाया
ले पैगाम सबके भले का चले तुम
बिगुल शांति का था तुम्हीं ने बजाया
लिया छीन तुमको, समय ने सभी से, मगर सच कहूँ, अब मरण हो रहा था

लगाया जो नारा बलन्दी से तुमने
छुआछूत घबरा के दम तोड़ बैठी
सहारा जो तुमने दिया शोषकों को
लो राहें सभी जातियाँ मोड़ बैठीं
अकेला जो बैठा था मन्दिर में रूठा
सभी के लिये एक भगवान सिरजा
तुम्ही ने कहा था—'सभी धर्म अपने
गुरुद्वारा, मन्दिर, यह मस्जिद, यह गिरजा'
जो मानव का मज़हब बनाया था तुमने, सभी का हमारा वह धन रो रहा था

कि जब जब घटायें अमां बन के आईं
उजाला तुम्हीं ने दिया चाँद बनकर
कि शहनाई गूँजी "कहानी" की तेरी
तपे सूर्य से तुम हमारे वतन पर
यह बांडुंग की बातें, यह नीति तुम्हारी
लो मरुधर में सागर बनाती रही है
ये खेतों की मेड़ें, तुम्हें प्यार करतीं
नई योजनाएँ जगाती रही हैं
सभी जो नया, आधुनिक था तुम्हारा, यह इतिहास बन समर्पण रो रहा था

बिना ताज का शहंशाह नेहरू
लो तुम पर निछावर, ये हीरे ये मोती
पुलक भावना के उमड़ते है दरिया
लो गीतों की मालाएँ, कलमे पिरोती
अधूरी है फिर भी, नही लिख सकूँगा,
कहानी तुम्हारी है करुणा से गीली
अरे सिह माँ के ! अरे ओ भगीरथ !
तेरी अस्थियाँ तक भी गंगा ने पी ली
यह श्रद्धा का सूरज तिरगे मे लिपटा, मगर आज उसका कफन रो रहा था



हे अस्थिकलश !

हे अस्थि-कलश ! तुमको प्रणाम

तुमने सागर को बाँध लिया
इन मिट्टी की दीवारों मे
तुमने तूफ़ाँ को रोक लिया
मिट्टी के कूल-कगारो मे
जिसने न कभी जाना विराम

इतिहास-पुरुष की रूप-देह
सोई है तेरे मानस मे
तूने विराट को वामन कर
बाँधा है अर्चन के रस मे
वह दण्ड भेद, वह शाम दाम

धरती का बेटा पाहुन है
तेरे प्राणों के आँगन का
माँ की ममता का नौनिहाल
आजादी के, समरांगण का
नेहरू जिसका निष्कलुप नाम

वह वज्रादपि कर्मठ कठोर
कुसुमादपि सुन्दर देह लिए
वह कोटि कोटि का इन्क़लाब
जो सत्य अहिंसा नेह पिए
सेवा से सुरभित यशः काम

इन अग्नि-अर्चियों ने उसकी
भौतिक देहो का अन्त किया,
पर खेतो ने उसकी विभूति पा
कण कण स्वर्ण-वसन्त किया
अर्पित श्रद्धा के सुबह शाम

□

हम खाली हाथ

हम खाली हाथ, लिए पतवार सभी लौटे

यह सारा ही रस विष में बदल गया जैसे
ये आम्र-कुंज, ये महमह करते चमन सभी
मुर्झाया आंचल, अरे! मुनहले खेतों का
टूटे मन में चल रहा, देख लो पवन अभी
जैसे हम पुण्य लुटाकर, हार सभी लौटे

भवनों का सब शृंगार अकिंचन लगता है
जैसे सब हों श्री-हीन, दिख रहे ढले हुए
मलयज कानन, वसवट के सारे मादन भी
दिख रहें आज, जैसे हों सारे जले हुए
बिन प्रतिमा के मन्दिर के द्वार सभी लौटे

सब कुछ लुट गया, अकेला बाक़ी बचा निशां
जैसे कुटिया में पहले कोई रहता हो
वह तूफ़ां का बेटा, वह ख्वाब हमारा था
हर कण कण जैसे यही कहानी कहता हो
हम बिना कुंभ होकर पनिहार सभी लौटे

यह फूलों का बादल, जो उमड़ा आता है
उसमें हीरों सा दमका, उसका अस्थि-कलश
वह उसकी राख नहीं, इतिहास हमारा है
सेवा के सत् से चमका उसका अस्थि-कलश
हम नौका को देकर मँझधार अभी लौटे

फूलों के रथ पर बैठी वह अपनी बहना
संजय, राजीव, चाँद सूरज से वीरन है
दोनों ही प्रहरी राम लखन से खड़े हुए
प्यारे भारत की रक्षा ही इनका प्रण है
जैसे हम, इनसे कर शृंगार सभी लौटे



यह वाणी के दो चार फूल

तेरी पूजा में अर्पित है, वाणी के ये दो चार फूल

हम भी तुम पर कुछ लिखें, आज यह धरती अम्बर बोल उठे
भावों से मर्माहत होकर, वाणी के सयम डोल उठे
बापू पर लिखा अनेकों ने, उन पर सब श्रद्धा करते थे
पर हम करते थे प्यार तुम्हे, तुमको सर्वस्व समझते थे
रोली कुंकुम बन गई तुम्हारी काया की वह चरण-धूल

हम धूप चाहते हैं फिर भी, सूरज को ताक नही सकते
इसकी किरणों पर मरते है, पर उसको झाँक नही सकते
तुम ऐसी "शमां" रहे सबकी, जो अनगिन सूरज लिए जले
हम सब तेरे परवाने थे, महबूब समझ कर तुम्हे चले
तुम रहे भगीरथ, कहता है—गंगा जमुना का पुण्य-कूल

चाँदनी सभी की होती है, यह चाँद अकेले अम्बर का
यह जोत करोड़ों चाँद लिए, यह चदा सात समन्दर का
जिसको हम जी भर प्यार करें, उस पर क्या न्योछावर कर दें
वाणी कहती है—मौन रहें, चरणों में सर आँसू धर दें
चंदा सूरज के वीरन तुम ! शूलों मे बदले सभी फूल

इतना लिख डाला अर्चन में, फिर भी लगता, कुछ कह न सके
ये बोल अधूरे रहे सभी, आघात दर्द हम सह न सके
प्रतिमा निष्प्राण हो गई है, सूना यह मन्दिर खड़ा हुआ
इतिहास रो रहा श्रद्धा में, कितना लिखने को पड़ा हुआ
कुर्बानी खुद ही कहती—"तुम ! लाखों शाखों के एक मूल !"

तुम परिजात भारत के थे, तुम से ही सब महमह करते
तुम आकर्षण थे शब्दों के, मुस्काने गीतों में भरते
यह अम्बर ऊपर ठहरा है, तुम जैसे ही प्रण-वीरों से
तेरे विवेक से सचेतन, आज़ादी सब ज़ंजीरों से
लक्ष्मण-रेखा सा आलोकित, तेरी सयम-श्री का दुकूल

हम तेरी स्वस्ति मनाने को, सब दीप जलाते मनसा के
कितने पन्ने रँग जायेंगे, तेरे यश की अनुशंसा के
हर वर्ष शाति-वन जाकर के, तेरा हित मात्र मनाते है
हम कालजयी कहकर तुमको, ममता से गीत बनाते हैं
हे विश्ववधु ! मानव-धर्मी, तेरे ही तो थे सब उसूल

तुम पद्म-पत्र के मुक्ता से, सौन्दर्य बन गए हम सबके
तुम टूटे, हारे, थके लोक के, प्राण रहे, हमदम सबके
तीसरे विश्व की आशा थे. तुम दलितवर्ग के सुगत-गीत
तुम हुए 'मसीहा भारत के' औदार्य्य पूर्ण हे प्राण-गीत !
जो समय-स्तभ का अमर-लेख. हम कैसे जाये उसे भूल



डॉ० हरीश

- जन्म सन् १९३२, शंभूगढ़ (भीलवाड़ा) राजस्थान में। शैशव मालवा में। शिक्षा एम० ए०, डी० फिल्० सन् १९५९ इलाहाबाद यूनि० से। डी० लिट्० का कार्य लखनऊ वि० वि० से पूरा किया।
- अपभ्रंश, आदिकाल, प्राच्यविद्या, राजस्थानी साहित्य एवं पाठ विज्ञान के विशेषज्ञ। संप्रति, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय अजमेर में, स्नातकोत्तर अध्यक्ष। अनेक शोध ग्रंथ आदिकाल पर प्रकाशित।
- प्रारंभिक जीवन भारी संघर्षों में। स्वभाव से कवि, व्यवहार से प्रोफेसर, विचारक और शोधक। कारयित्री और भावयित्री दोनों प्रतिभाओं के धनी। दर्द, शृंगार और लोक-तात्विक सिद्धांत का कवि। मित्रों का मित्र। दर्द को ईमान मानने वाला। निसर्ग का चितेरा।
- काव्य सृजन १९५० से। धड़कनों के बोल (१९६५) प्रथम काव्य, भारती भंडार, प्रयाग से। आगामी, 'दर्द ज़िन्दगी, तन्हाइयाँ और मैं, अपना ही एक बिंब, काव्य प्रकाशन क्रम में। 'ईसा मसीह' पर इन दिनों महाकाव्य सृजन में रत।
- आकाशवाणी जयपुर एवं इलाहाबाद के लोकप्रिय कवि, नाटककार एवं वार्ताकार। बाल काव्य विशेषज्ञ। राज० सा० अकादमी के पुरस्कार विजेता '७०'। सहज भावुक। निगनाओं के शब्दों में 'हरीश जी सच्चे पानी के कवि हैं।'